कृषि मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा पुरस्कृत कृषि अखबार

Registered Postal Regn. No.MP/Bhopal/4-150/2023-25 RNI No.-CHHHIN/2002/10910, डाक प्रेषण का दिन - मंगलवार, बुधवार

कृषक जगत

राष्ट्रीय कृषि अखबार भोपाल-जयपुर-रायपुर ISSN -0970-8650

संस्थापित 1946 रायपुर, प्रकाशन - सोमवार 15 सितम्बर 2025 वर्ष - 24 अंक - 2 मूल्य रु. 12/- कुल पृष्ठ - 12 www.krishakjagat.org पृष्ठ - 1

कृषक जगत न्यूज़ वेबसाइट पर जाने के लिए QR कोड स्कैन करें

श्रेष्ठ कृषि पत्रकारिता के लिए भाकृअनुप ICAR चौधरी चरणसिंह अवार्ड से पुरस्कृत

पढ़िये...

5

सरसों की उन्नत खेती

7

मृदा सुधार का आधार व किसानों का मित्र केंचुआ खाद

एक ही जमीन पर दर्ज प्रत्येक परिवारों को मिलेगा पीएम किसान सम्मान निधि का लाभ

छत्तीसगढ़ में 25 लाख 47 हजार किसान परिवार हो रहे हैं लाभान्वित

रायपुर। प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना के दिशा-निर्देशों के अनुसार यदि एक ही भूमि खाता (सिंगल लैण्ड होल्डिंग) में कई किसान परिवारों के नाम दर्ज हैं, तब भी प्रत्येक पात्र परिवार को अलग-अलग प्रतिवर्ष 6000 रूपए तक का लाभ प्राप्त करने का अधिकार होगा। बशर्ते वे योजना के दिशा-निर्देशों के अनुसार पात्र हो। प्रत्येक परिवार को न्यूनतम 6000 रूपए वार्षिक की वित्तीय सहायता सीधे उनके खाते में उपलब्ध कराई जाएगी।

योजना की पात्रता शर्तों के तहत 'किसान परिवार' का अर्थ पति-पत्नी और अवयस्क बच्चों से है। यदि एक ही भूमि खाते से कई परिवार जुड़े हुए हैं, तो योजना का लाभ खाता संख्या से नहीं बल्कि परिवार की इकाई के आधार पर दिया जाएगा। इस प्रकार एक भूमि खाता साझा करने वाले अलग-अलग परिवारों को भी स्वतंत्र रूप से यह सहायता राशि प्राप्त होगी।

भारत सरकार द्वारा वर्ष 2019 में शुरू की गई इस योजना का उद्देश्य देशभर के छोटे और सीमांत किसानों को वित्तीय सहायता प्रदान करना है। राशि तीन समान किस्तों में दी जाती है, प्रत्येक किस्त 2000 रूपए की होती है। कृषि मंत्रालय ने स्पष्ट किया है कि कोई भी पात्र किसान परिवार इस योजना से वंचित न रहे, इसके लिए राज्यों और जिलों को नियमित रूप से पात्रता की जाँच कर लाभार्थियों को जोड़ा जा रहा है। प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना का लाभ सभी किसानों को नहीं मिलता। सरकार ने कुछ श्रेणियों को इस योजना से बाहर रखा है। इनमें सभी संस्थागत भूमि धारक, संवैधानिक पदों के पूर्व और वर्तमान धारक, सांसद, विधायक, मंत्री, महापौर और जिला पंचायत अध्यक्ष शामिल हैं। केंद्र और राज्य सरकार के मंत्रालयों व विभागों के अधिकारी-कर्मचारी (चतुर्थ श्रेणी को छोड़कर) तथा 10000 रुपये या उससे अधिक पेंशन पाने वाले सेवानिवृत्त कर्मचारी भी योजना का लाभ प्राप्त करने के लिए पात्र नहीं है। इसके अलावा आयकरदाता परिवार भी इस योजना के दायरे से बाहर हैं।

छत्तीसगढ़ राज्य में प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना के अंतर्गत फरवरी 2025 में 20वीं किश्त के रूप में राज्य के 25.47 लाख किसानों को 553 करोड़ 34 लाख रूपए की सम्मान निधि प्रदान की गई थी। इस योजना से देश के करोड़ों किसान परिवार लाभान्वित हो रहे हैं।

क्यू आर कोड स्कैन कर किसान सीधे बेच सकेंगे अपनी फसल

कृषि क्रांति लाने मुख्यमंत्री ने किसान कॉल सेंटर का किया शुभारम्भ, बिचौलियों से मिलेगी निजात

रायपुर। जशपुर जिले के किसानों के हित में चलाई जाने वाले कृषि क्रांति अभियान अंतर्गत किसान कॉल सेंटर एग्रीबिड और बाजार व्यवस्था को सरल बनाने के उद्देश्य से क्यू आर कोड आधारित जी कॉम इंडिया का शुभारंभ मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय द्वारा अपने बगिया स्थित निज निवास कार्यालय से किया गया। इस कार्यक्रम में पूर्व केंद्रीय मंत्री श्री अर्जुन मुंडा उपस्थित रहे। मुख्यमंत्री ने कहा कि किसान कॉल सेंटर में +91-8069378107 नम्बर पर किसानों को सहायता मिलेगी।

अफीम की खेती के लिए नई लाइसेंस नीति घोषित

15 हजार नए किसान होंगे शामिल

नई दिल्ली (कृषक जगत)। केंद्र सरकार ने मध्य प्रदेश, राजस्थान और उत्तर प्रदेश के किसानों के लिए अफीम पोस्त की खेती से जुड़ी वार्षिक लाइसेंसिंग नीति की घोषणा की है। यह नीति 1 अक्टूबर 2025 से 30 सितंबर 2026 तक के फसल वर्ष के लिए लागू होगी।

मुख्य बातें:

- इस नीति के तहत 1.21 लाख किसान लाइसेंस के पात्र होंगे।
- यह पिछले साल की तुलना में 23.5 प्रतिशत ज्यादा है - यानी 15,000 नए किसान अब अफीम की खेती कर सकेंगे।
- सरकार का उद्देश्य चिकित्सा जरूरतों के लिए जरूरी एल्कलॉइड की आपूर्ति को सुनिश्चित करना है।

लाइसेंस देने की शर्तें

- जो किसान 4.2 किग्रा/हेक्टेयर या उससे अधिक मॉर्फिन उपज (एमक्यूवाई) दे रहे हैं, उन्हें अफीम गोंद उत्पादन की अनुमति जारी रहेगी।

- जिनकी उपज 3.0 से 4.2 किग्रा/हे. के बीच है, वे अब चीरा लगाए बिना पोस्ता भूसे से एल्कलॉइड निकालने की विधि (CPS) से खेती कर सकेंगे, वह भी 5 साल के लाइसेंस के साथ।
- जिन किसानों ने पिछले साल 800 किग्रा/हेक्टेयर से कम उपज दी थी, उनके CPS लाइसेंस निलंबित किए जाएंगे।
- 900 किग्रा/हेक्टेयर या अधिक उपज देने वाले बेहतर किसानों को फिर से पारंपरिक अफीम गोंद उत्पादन की अनुमति दी जाएगी, जिससे उनकी आमदनी बढ़ सकेगी।

श्री राधाकृष्णन देश के 15वें उपराष्ट्रपति बने

नई दिल्ली (कृषक जगत)। श्री सी.पी. राधाकृष्णन ने भारत के पंद्रहवें उपराष्ट्रपति और राज्यसभा के सभापति के रूप में शपथ ली। राष्ट्रपति भवन में आयोजित शपथ ग्रहण समारोह में, राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मु ने श्री सी.पी. राधाकृष्णन को शपथ दिलाई। श्री राधाकृष्णन इससे पहले महाराष्ट्र के राज्यपाल थे।

परिचय : 4 मई 1957 को तमिलनाडु के तिरुपुर में जन्मे, श्री चंद्रपुरम पोन्नुसामी राधाकृष्णन ने बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन में स्नातक की उपाधि प्राप्त की। आरएसएस के स्वयंसेवक के रूप में शुरुआत करके, वे 1974 में भारतीय जनसंघ की राज्य कार्यकारिणी के सदस्य बने।

संसदीय एवं सार्वजनिक जीवन

वर्ष 1996 में, श्री सी.पी. राधाकृष्णन को तमिलनाडु भाजपा का सचिव नियुक्त किया गया। वे 1998 में कोयंबटूर से पहली बार लोकसभा के लिए चुने गए और 1999 में पुन: निर्वाचित हुए।

वर्ष 2004 से 2007 के बीच, श्री राधाकृष्णन तमिलनाडु भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष रहे। इस पद पर कार्य करते हुए, उन्होंने 'रथ यात्रा' की, जो 93 दिनों तक चली। वर्ष 2016 में, श्री राधाकृष्णन को कोच्चि स्थित कॉयर बोर्ड का अध्यक्ष नियुक्त किया गया। वे चार वर्षों तक इस पद पर रहे।

18 फरवरी 2023 को, श्री राधाकृष्णन को झारखंड का राज्यपाल नियुक्त किया गया। अपने कार्यकाल के पहले चार महीनों में, उन्होंने राज्य के सभी 24 जिलों का दौरा किया। उन्होंने तेलंगाना के राज्यपाल और पुडुचेरी के उपराज्यपाल का अतिरिक्त कार्यभार भी संभाला।

श्री राधाकृष्णन ने संयुक्त राज्य अमेरिका, यूनाइटेड किंगडम, फ्रांस, जर्मनी, इटली, स्पेन, पुर्तगाल, नॉर्वे, डेनमार्क, स्वीडन, फिनलैंड, बेल्जियम, हॉलैंड, तुर्की, चीन, मलेशिया, सिंगापुर, ताइवान, थाईलैंड, मिस्र, संयुक्त अरब अमीरात, बांग्लादेश, इंडोनेशिया, जापान की यात्रा की है।

व्यक्तिगत विवरण

नाम	: श्री चंद्रपुरम पोन्नुसामी राधाकृष्णन
पिता	: श्री पोन्नुसामी
माता	: श्रीमती सी.पी. जानकी
जन्म तिथि	: 4 मई 1957
जन्म स्थान	: तिरुपुर, तमिलनाडु
वैवाहिक स्थिति	: 25 नवंबर 1985
पत्नी	: श्रीमती सुमति आर.
बच्चे	: एक बेटा और एक बेटी

छोटे किसानों को ध्यान में रखकर रणनीति बनाना जरूरी : डॉ. जाट

'डायलॉगनेक्स्ट' सम्मेलन में हुआ वैश्विक खाद्य सुरक्षा पर मंथन

नई दिल्ली (कृषक जगत)। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (ICAR) के कन्वेंशन सेंटर में दो दिवसीय 'डायलॉगनेक्स्ट' सम्मेलन का आयोजन हुआ, जिसका उद्देश्य वैश्विक खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए कृषि नवाचारों को बढ़ावा देना और किसान-केन्द्रित समाधान तलाशना रहा।

इस सम्मेलन का आयोजन वर्ल्ड फूड प्राइज़ फाउंडेशन द्वारा, सीआईएमएमआईटी, बोरलॉग इंस्टीट्यूट फॉर साउथ एशिया (BIS) और आईसीएआर के साथ साझेदारी में किया गया। इस वर्ष की थीम थी- 'इसे किसान तक ले चलो' जो किसानों तक प्रभावशाली और व्यवहारिक तकनीकों को पहुँचाने पर केंद्रित रही।

नवाचारों को गति और किसानों को लाभ

आईसीएआर के महानिदेशक डॉ. मांगी लाल जाट ने कहा कि वैश्विक कृषि चुनौतियों के समाधान के लिए छोटे किसानों को केंद्र में रखते हुए प्रभावी और तेज क्रियान्वयन योग्य रणनीतियाँ जरूरी हैं। भारत, कृषि नवाचारों का एक वैश्विक केंद्र बन सकता है। वर्ल्ड फूड प्राइज़ फाउंडेशन के वरिष्ठ निदेशक श्री निकोल प्रेंगर ने कहा कि भारत में इस सम्मेलन का आयोजन, डॉ. नॉर्मन बोरलॉग की विरासत को सम्मानित करने जैसा है, जिन्होंने भारत में हरित क्रांति लाने में ऐतिहासिक भूमिका निभाई थी।

भारत में बायोस्टिमुलेंट्स की अस्थायी पंजीकरण व्यवस्था खत्म

अब सिर्फ 146 उत्पाद मान्य, 9,352 रद्द

(निमिष गंगराडे)

नई दिल्ली (कृषक जगत)। भारत सरकार ने बायोस्टिमुलेंट्स को लेकर बड़ा कदम उठाया है। अब तक चल रही अस्थायी पंजीकरण व्यवस्था को पूरी तरह समाप्त कर दिया गया है। इस फैसले के बाद केवल 146 उत्पाद ही फर्टिलाइज़र कंट्रोल ऑर्डर (FCO), 1985 के तहत स्वीकृत रहेंगे, जबकि 9,352 उत्पादों का पंजीकरण रद्द कर दिया गया है।

नियम कब और कैसे शुरू हुए

कई वर्षों तक भारत में लगभग 30,000 बायोस्टिमुलेंट उत्पाद बिना किसी स्पष्ट नियामक ढाँचे के बाजार में उपलब्ध थे। इस अव्यवस्था को रोकने के लिए केंद्र सरकार ने 23 फरवरी 2021 को नोटिफिकेशन S.O. 882(E) जारी कर FCO में नया क्लॉज़ 20C जोड़ा। इसके जरिए बायोस्टिमुलेंट्स की गुणवत्ता और सुरक्षा मानक तय किए गए।

नौ श्रेणियों में वर्गीकृत

वनस्पति अर्क, जैव-रासायनिक उत्पाद, प्रोटीन हाइड्रोलायट, विटामिन, सूक्ष्मजीव उत्पाद, एंटीऑक्सीडेंट, एंटी-ट्रांसपाइरेंट्स, ह्यूमिक और फुल्विक एसिड तथा जीवित सूक्ष्मजीव (बायोफर्टिलाइज़र और बायोपेस्टिसाइड्स को छोड़कर)।

अस्थायी पंजीकरण की व्यवस्था

कंपनियों को उत्पादों की प्रभावकारिता, रसायन विज्ञान और विषाक्तता से जुड़ा डेटा जुटाने के लिए समय देने हेतु सरकार ने अस्थायी पंजीकरण (G3 सर्टिफिकेट) की सुविधा दी।

- **23 फरवरी 2021 :** बायोस्टिमुलेंट्स FCO में शामिल। **23 फरवरी 2023:** अस्थायी पंजीकरण की पहली अवधि समाप्त। **फरवरी 2024 और 2025:** दो बार विस्तार दिया गया।
- **16 जून 2025:** अंतिम विस्तार।

मौजूदा स्थिति

कृषि मंत्रालय ने स्पष्ट कर दिया है कि 16 जून 2025 के बाद किसी भी उत्पाद को और विस्तार नहीं मिलेगा। 17 जून 2025 से सभी 9,352 अस्थायी पंजीकरण रद्द कर दिए गए। सितम्बर 2025 तक केवल 146 बायोस्टिमुलेंट उत्पाद ही पूरी तरह से FCO, 1985 की अनुसूची VI में सूचीबद्ध और स्वीकृत हैं। (प्रतिबंधित उत्पादों की पूरी सूची देखने के लिए ग्लोबल-एग्रीकल्चर वेबसाइट के लिंक पर जाएं https://www.global-agriculture.com/wp-content/uploads/2025/09/Biostimulant-Product-Banner.pdf

विशेषज्ञ टिप्पणी

कृषि विशेषज्ञों का मानना है कि यह कदम लंबे समय में भारतीय कृषि के लिए सकारात्मक साबित होगा। एक वरिष्ठ वैज्ञानिक ने कहा, 'पहले बाजार में कई बायोस्टिमुलेंट बिना परीक्षण और प्रमाणन के बिक रहे थे। अब केवल वही उत्पाद किसान तक पहुँचेंगे जो वैज्ञानिक मानकों पर खरे उतरते हैं।

'विकसित कृषि संकल्प अभियान' का दूसरा चरण

रबी फसल के लिए देशभर में 3 से 18 अक्टूबर तक चलेगा अभियान

15-16 सितंबर को दिल्ली में होगा दो दिवसीय राष्ट्रीय रबी सम्मेलन

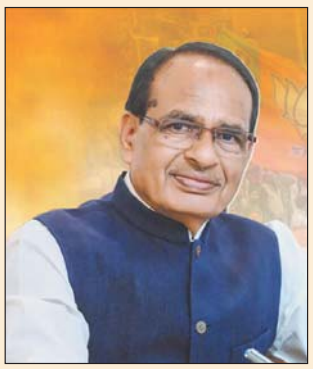

नई दिल्ली (कृषक जगत)। 'विकसित कृषि संकल्प अभियान' के पहले चरण की अपार सफलता के बाद केंद्रीय कृषि और ग्रामीण विकास मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान के नेतृत्व में अभियान के दूसरे चरण की शुरुआत होने जा रही है। पिछली बार खरीफ फसल के लिए अभियान शुरू हुआ था और अब रबी फसल को लेकर देशभर के कृषि वैज्ञानिक इस अभियान के जरिए गांव-गांव जाकर किसानों से मिलेंगे, आवश्यक जानकारी देंगे, उनकी समस्याएं सुनेंगे और प्रधानमंत्री के 'लैब टू लैंड' मंत्र को साकार करने में भूमिका निभाएंगे। इसी क्रम में 15 सितंबर से नई दिल्ली में दो दिवसीय 'राष्ट्रीय कृषि सम्मेलन-रबी अभियान 2025' पूसा में आयोजित हो रहा है। रबी फसलों के लिए दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन देशभर के कृषि विशेषज्ञों, वैज्ञानिकों, नीति-निर्धारकों एवं राज्य सरकारों के वरिष्ठ प्रतिनिधियों के लिए एक साझा मंच प्रदान करेगा, जहाँ रबी 2025-26 की बुवाई सीज़न से संबंधित तैयारियों, उत्पादन लक्ष्यों और रणनीतियों पर गहन चर्चा होगी। सम्मेलन की अध्यक्षता केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान करेंगे।

इस अवसर पर अनेक राज्यों के कृषि मंत्री, केंद्रीय कृषि सचिव, आईसीएआर के महानिदेशक सहित अन्य संबंधित केंद्रीय मंत्रालयों तथा राज्यों के वरिष्ठ अधिकारी शामिल होंगे। केंद्रीय कृषि मंत्री के निर्देश पर पहली बार रबी सम्मेलन दो दिन का हो रहा है जिसमें कृषि से संबंधित चुनौतियां तथा रबी मौसम की फसलों के लिए किसानों को लाभ पहुंचाने की दृष्टि से विभिन्न प्रकार के विषयों पर चर्चा की जाएगी।

सम्मेलन में छत्तीसगढ़ के कृषि मंत्री श्री राम विचार नेताम भी शामिल होंगे

सम्मेलन में विभिन्न राज्यों की सफलताओं और सर्वोत्तम प्रथाओं को साझा किया जाएगा ताकि उन्हें अन्य राज्यों में भी लागू किया जा सके। साथ ही, मौसम पूर्वानुमान, उर्वरक प्रबंधन, कृषि अनुसंधान और तकनीकी हस्तक्षेप से जुड़े विषयों पर भी विशेषज्ञ अपने विचार प्रस्तुत करेंगे। यह सम्मेलन न केवल रबी 2025-26 सीज़न की कार्ययोजना और उत्पादन रणनीति को दिशा देगा, बल्कि यह किसानों की आय वृद्धि, टिकाऊ कृषि प्रणाली और राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने की दिशा में भी एक महत्वपूर्ण कदम साबित होगा।

डबरी निर्माण के लिए किसानों को करें प्रोत्साहित : श्री डेका

रायपुर। राज्यपाल श्री रमेन डेका ने जल संसाधन एवं कृषि विभाग के सचिव की बैठक लेकर राज्य में घटते भू-जल स्तर पर गंभीर चिंता व्यक्त करते हुए किसानों को खेतों में डबरी निर्माण के लिए प्रोत्साहित करने का सुझाव दिया।

राज्यपाल श्री डेका ने कहा कि वर्षा का जल संचयन ही भविष्य की कृषि और जल संकट का समाधान है। उन्होंने कहा कि किसानों को विभिन्न योजनाओं में अनुदान उपलब्ध कराया जाता है। उन्हें अपने खाली पड़े जमीनों पर डबरी निर्माण के लिए प्रोत्साहित करने से भूजल स्तर बढ़ेगा।

राज्यपाल ने जल संसाधन और कृषि विभाग को मिलकर ठोस कार्ययोजना बनाने पर जोर दिया। राज्यपाल ने कहा कि यह पहल न केवल किसानों की सिंचाई की समस्या को हल करेगी बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए जल संरक्षण का मजबूत आधार भी बनेगी।

बैठक में जल संसाधन विभाग के सचिव श्री राजेश सुकुमार टोप्पो और कृषि विभाग की सचिव सुश्री शहला निगार उपस्थित रहे।

प्रदेश में 47 लाख हेक्टेयर से अधिक हुई खरीफ बोनी

रायपुर। खरीफ सीजन 2025 में प्रदेश में 47.85 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में धान, मक्का, कोदो-कुटकी सहित विभिन्न फसलों की बोनी हो चुकी है। खेतों में निंदाई-कोड़ाई का कार्य तेजी के साथ जारी है। इस खरीफ सीजन में राज्य सरकार ने 48.85 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में बोनी का लक्ष्य रखा है। वहीं चालू खरीफ सीजन में किसानों को 6636 करोड़ रुपए का ब्याज मुक्त ऋण वितरित किया जा चुका है। ब्याज मुक्त ऋण वितरण से 14 लाख 96 हजार किसान लाभान्वित हुए है। इस वर्ष 7 हजार 800 करोड़ रूपए ऋण वितरण का लक्ष्य रखा गया है।

मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय ने किसानों को खेती-किसानी में सहुलियतें प्रदान करने के लिए सभी आवश्यक सहयोग करने संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किए हैं। उन्होंने किसानों को उनकी मांग के अनुसार सुगमता के साथ खाद का वितरण करने को भी कहा हैं। कृषि मंत्री श्री रामविचार नेताम के मार्गदर्शन में कृषि विभाग के अधिकारियों द्वारा इन पर निरंतर निगरानी रखी जा रही है। प्रदेश के किसानों को अब तक 13.83 लाख मीट्रिक टन खाद और 4.72 लाख क्विंटल प्रमाणित बीज का वितरण किया जा चुका है। 08 सितम्बर 2025 की स्थिति में प्रदेश में प्रदेश में 961 मिमी से अधिक औसत वर्षा दर्ज की गई है, जबकि प्रदेश की औसत वार्षिक वर्षा 1238.7 मिमी है।

कृषि विभाग के अधिकारियों ने बताया कि इस वर्ष खरीफ 2025 के लिए प्रदेश में 4.95 लाख क्विंटल प्रमाणित बीज वितरण का लक्ष्य रखा गया है, जिसमें से 4.86 लाख क्विंटल बीज का भंडारण कर अब तक 4.72 लाख क्विंटल बीज का वितरण किसानों को किया गया है, जो मांग का 95 प्रतिशत है।

इसी प्रकार प्रदेश में इस खरीफ सीजन में 14.62 लाख मीट्रिक टन उर्वरक वितरण का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। उक्त लक्ष्य के विरूद्ध 16.04 लाख मीट्रिक टन उर्वरकों का सहकारी एवं निजी क्षेत्रों में भंडारण किया गया है। उक्त भंडारण के विरूद्ध 13.83 लाख मीट्रिक टन उर्वरकों का वितरण किसानों को किया जा चुका है, जो लक्ष्य का 95 प्रतिशत है।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक विजय कुमार बोन्द्रिया द्वारा एल.आई.जी.-5, सेक्टर -2 शंकर नगर, रायपुर 492001 (छत्तीसगढ़) से प्रकाशित एवं कृषक जगत, 14 इंदिरा प्रेस कॉम्पलेक्स, भोपाल (म.प्र.) से मुद्रित, सम्पादक : सुनील गंगराड़े, समन्वयक : अतुल सक्सेना, रायपुर : प्रेम प्रकाश सुल्लेरे, फोन : 0771-2420449, मो. : 9826255862, इस अंक का मूल्य रु. 12/-, वार्षिक शुल्क रु. 600/- RNI No.-CHHHIN/2002/10910, E-mail-info@krishakjagat.org

ऑनलाईन सदस्यता के लिए लॉग इन करें
www.krishakjagat.org

कृषक जगत
संस्थापक : स्व. माणिकचन्द्र बोन्द्रिया - स्व. सुरेशचन्द्र गंगराड़े

अमृत जगत

सज्जन से की गई प्रार्थना कभी निष्फल नहीं होती।
- महाकवि कालिदास

किसानों के लिए लाभकारी औषधीय फसलों की खेती

रोगों के उपचार के लिये औषधि पौधों के उपयोग का इतिहास सदियों से पुराना रहा है। पौधों के औषधि गुण-दोषों का तकनीकी हस्तांतरण गुरू-शिष्य परम्परा अनुसार होता था। श्रुति परम्परा में गुरू द्वारा दिया गया मौखिक ज्ञान शिष्यों को याद रखना होता था तथा अगली पीढ़ी को उनके बारे में अवगत कराना होता था। हमारे वेदों से लेकर रामायण तथा महाभारत तक तत्कालीन लेखों में औषधीय पौधों के तत्वों तथा उनके उपयोग विभिन्न रोगों के लिये करने की विधियां अंकित थीं। आज से 3000 वर्ष पूर्व चरक, सुश्रुत ने अपने ग्रंथों में औषधि पौधों का महत्व तथा उनकी उपयोगिता विधि पर विस्तार से जानकारी दी। रामायण में जब लक्ष्मण को मेघनाथ द्वारा शक्ति के उपयोग से मुर्छित किया गया तब लंका के अनुभवी राजवैद्य श्री सुषेण द्वारा हिमालय पर्वत पर पैदा होने वाली औषधि संजीवनी पौध का उल्लेख आज भी प्रासंगिक है। औषधि पौधों से प्राप्त तत्वों का उपयोग वर्तमान में केवल आयुर्वेदिक चिकित्सा प्रणाली तक ही सीमित नहीं है, बल्कि विश्व में करीब 75 से लेकर 80 प्रकार के औषधि पौधों के तत्वों का उपयोग एलोपेथी में भी किया जा रहा है। भारत

की लगभग 140 करोड़ की आबादी में लगभग 65 प्रतिशत जनसंख्या किसी न किसी रूप में आयुर्वेदिक दवाइयों का उपयोग करती है। भारतीय उपमहाद्वीप में लगभग 8000 पौध प्रजातियों का उपयोग औषधियों के रूप में किया जाता है। इन औषधि पौधों में प्रमुख है चिरायता, सदाबहार, अश्वगंधा, रजनीगंधा, कोंच, कलिहार, सतावर, सनाय, लावची, ग्वारपाठा तथा बैलाडोना इत्यादि। वर्तमान में एलोवेरा भी औषधियों के तत्काल प्रभाव का सभी लोगों पर है परंतु उन दवाओं का असर शरीर पर विपरीत हो रहा है यह भी सर्वमान्य है। यही वजह है कि हमारी धरोहर से कीमती औषधि पौधों को हम सहेजकर रखें और उनका उपयोग करके बिना किसी विपरीत असर के रोगों से मुक्ति प्राप्त कर सकें। इसके लिये जरुरी है कि हर कृषक अपनी खेती के कुछ भाग में औषधि फसल लगाकर स्वयं की आर्थिक स्थिति में सुधार लाये तथा समाज की मदद भी करे। भारत में औषधि फसलों का रकबा लगभग 7.28 लाख हेक्टर है। तथा उत्पादन लगभग 9.98 लाख टन है परंतु यह निर्विवाद सत्य है कि इतने विशाल कृषि के क्षेत्र में से बहुत ही सीमित क्षेत्र में औषधि फसलों का उत्पादन किया जा रहा है। जबकि देश-प्रदेश की जलवायु भूमि तथा वर्षा सभी प्रकार की औषधि फसलों को पैदा करने के लिए उपयुक्त है। औषधि फसलों की खेती के लिये केंद्र सरकार द्वारा आत्मनिर्भर भारत अभियान के तहत प्रोत्साहित किया जा रहा है। औषधीय फसलों से नए किसानों को जोड़कर उनकी उपज की न केवल मार्केटिंग की जाएगी, बल्कि प्रोसेसिंग यूनिट लगाने के लिए भी वित्तीय व्यवस्था की जाएगी।

खामोश की जातीं पर्यावरण बचाने वालों की आवाज़ें

• कुमार सिद्धार्थ

वैश्विक स्तर पर पर्यावरण कार्यकर्ताओं पर मंडरा रहे भयावह संकट को उजागर करने वाली हाल की 'ग्लोबल विटनेस' रिपोर्ट बताती है कि वर्ष 2012 से अब तक पर्यावरण संरक्षण के लिए संघर्ष करते हुए 2106 कार्यकर्ताओं की हत्या हो चुकी है। इनमें से एक-तिहाई से अधिक हत्याएँ लैटिन अमेरिका में हुईं। अकेले वर्ष 2023 में कम-से-कम 196 लोगों की जानें गईं। इस रिपोर्ट से स्पष्ट है कि पर्यावरण की रक्षा करने वाले लोग आज भयंकर शारीरिक, मानसिक और सामाजिक खतरों का सामना कर रहे हैं। खनन, औद्योगिक और निर्माण परियोजनाओं के खिलाफ खड़े होने के कारण ये कार्यकर्ता सत्ता और पूंजी के निशाने पर आ जाते हैं।

'ग्लोबल विटनेस,' जो बीते ढाई दशक से तेल, गैस, खनन और वन क्षेत्रों में मानवाधिकारों और पर्यावरणीय शोषण की जाँच करता रहा है, ने इस रिपोर्ट को 200 से अधिक देशों के पर्यावरण कार्यकर्ताओं से बातचीत के आधार पर तैयार किया है। रिपोर्ट के अनुसार, इनमें से 90 फीसदी से अधिक लोगों को शारीरिक और मानसिक तौर पर प्रताड़ना का सामना करना पड़ा है और 25 फीसदी से अधिक पर हिंसक हमले हुए हैं। 70 फीसदी हत्याएँ खनन, बड़े बांधों और जंगलों की कटाई के खिलाफ आंदोलन करने वालों की हुई हैं।

रिपोर्ट बताती है कि विकास की आड़ में स्थानीय समुदाय, विशेषकर आदिवासी, किसान, महिलाएं और मछुआरे, खास निशाने पर हैं। जब ये समुदाय अपनी ज़मीन, जंगल और नदियों के संरक्षण की आवाज उठाते हैं, तो या तो उन्हें झूठे मामलों में फँसाया जाता है या फिर वे गोलियों का शिकार होते हैं। कोलंबिया, फिलीपींस, ब्राज़ील, कांगो और होंडुरास जैसे देश इस हिंसा के गवाह हैं। यहां हर साल सैकड़ों लोग सिर्फ इसलिए मारे जाते हैं क्योंकि वे अपने जंगल, नदियों, खेतों और अस्तित्व की रक्षा के लिए संघर्षरत हैं।

कोलंबिया लगातार दूसरे साल सबसे खतरनाक देश माना गया था जहाँ 2023 में 79 पर्यावरण रक्षकों की हत्याएं हुई। यह लगातार चौथा वर्ष है, जब कोलंबिया में सबसे अधिक हत्याएं दर्ज हुई हैं। वर्ष 2012 से अब तक ऐसी 461 हत्याएं हुई हैं, जो किसी भी देश के मुकाबले अधिक हैं। इसके बाद ब्राजील में 34, मैक्सिको और होंडुरास में 18-18 और फिलीपींस में 11 पर्यावरण रक्षकों की हत्याएं हुईं। मध्य अमेरिका पर्यावरण कार्यकर्ताओं के लिए

सबसे खतरनाक क्षेत्र बन चुका है, जहां प्रति व्यक्ति हत्याओं की दर सबसे अधिक रही है।

इनमें से अधिकांश हमले वनों की रक्षा करने वालों, खनन विरोधी आंदोलनों में शामिल लोगों और आदिवासी समुदायों के प्रतिनिधियों पर हुए हैं। अक्सर ये हमले संगठित अपराधियों, सरकार समर्थित ठेकेदारों या निजी कंपनियों के इशारों पर होते हैं। इंडोनेशिया और थाईलैंड में कार्यकर्ताओं को 'रेड टैगिंग' (देशद्रोही) करार देकर मारा या गायब किया जा रहा है।

इन मामलों में भारत की स्थिति भी चिंताजनक है। रिपोर्ट के अनुसार 2012 से 2022 के बीच भारत में 71 पर्यावरण रक्षकों की हत्या दर्ज की गई। इनमें से कई पत्रकार थे, जो ज़मीन अधिग्रहण और अवैध खनन जैसे संवेदनशील विषयों पर रिपोर्टिंग कर रहे थे। वर्ष 2014 के बाद मारे गए 28 पत्रकारों में से 13 पर्यावरण से जुड़े मुद्दों पर काम कर रहे थे। भारत में रेत-माफिया और अवैध खनन पर लिखने वाले पत्रकारों को खासकर निशाना बनाया गया।

यदा-
कदा प्लास्टिक की पन्नी बीन लेने, जीव-दया के नाम पर आवारा कुत्तों को दो-पांच रुपयों के बिस्किट खिला देने, कभी-कभार बिगड़ती हवा की लानत-मलामत कर देने और तीज-त्यौहारों पर पेड़ लगा देने को पर्यावरण संरक्षण मानने वालों को 'ग्लोबल विटनेस' की यह रिपोर्ट चौंका सकती है जिसके मुताबिक जल, जंगल, जमीन बचाने वाले हजारों पर्यावरण कार्यकर्ताओं को अपने बेहद कठिन काम के बदले जीवन तक का सौदा करना पड़ रहा है। क्या संकट हैं, पर्यावरण बचाने वालों के?

रिपोर्ट इंगित करती है कि भारत में नागरिक अधिकार कार्यकर्ताओं, पर्यावरणविदों और पत्रकारों पर बढ़ती निगरानी, गिरफ्तारी और बदनाम करने की घटनाओं में तेज़ी आई है। साथ ही, उनके खिलाफ 'गैरकानूनी गतिविधियां रोकथाम अधिनियम' (यूएपीए) जैसे कठोर कानूनों का दुरुपयोग कर उनकी आवाज़ को दबाया जा रहा है। सरकारों द्वारा कार्यकर्ताओं को वर्षों जेल में रखना, उनकी जमानत रोकना और उन्हें 'राष्ट्र विरोधी' करार देना जैसी घटनाएं कई राज्यों में सामने आई हैं।

'ग्लोबल विटनेस' के अनुसार, भारत में सामाजिक कार्यकर्ताओं और गैर-सरकारी संगठनों पर मनमाने आपराधिक आरोप लगाए जा रहे हैं, उन पर निगरानी रखी जा रही है और उनके बैंक खाते फ्रीज़ कर दिए गए हैं, जिससे नागरिक समाज पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा है। रिपोर्ट इस बात पर भी ज़ोर देती है कि कई देशों में पर्यावरण कार्यकर्ताओं को ऐसे मुकदमों का सामना करना पड़ता है जिनका उद्देश्य ही जनहित में उठी आवाज़ों को रोकना है। ये मुकदमे इतने लंबे और खर्चीले होते हैं कि आम नागरिक उनमें फँसकर टूट जाते हैं या चुप हो जाते हैं।

आदिवासी समुदाय इससे सर्वाधिक प्रभावित हैं- कुल हत्याओं के 34 फीसदी शिकार आदिवासी रहे हैं। उनके पास कानूनी दस्तावेज़ों का अभाव, मुख्यधारा से दूरी और राजनीतिक समर्थन की कमी उन्हें कमजोर बनाती है, जबकि यही समुदाय सदियों से प्रकृति के साथ सहजीवन की मिसाल पेश करते आए हैं।

'ग्लोबल विटनेस' रिपोर्ट की भूमिका में प्रसिद्ध पर्यावरणविद् डॉ. वंदना शिवा लिखती हैं - 'हम केवल जलवायु आपातकाल के दौर में नहीं हैं, बल्कि एक व्यापक प्रजातीय विलुप्ति की ओर बढ़ रहे हैं। ऐसे समय में ये पर्यावरण कार्यकर्ता उन चुनिंदा लोगों में हैं, जो इस लड़ाई में डटे हुए हैं। वे न केवल सही हैं, बल्कि इसलिए भी सुरक्षा पाने के अधिकारी हैं क्योंकि हमारी प्रजाति और हमारे हरित ग्रह का भविष्य उन्हीं के संघर्षों पर टिका है।'

आज जब जलवायु संकट के प्रभाव दुनिया के हर कोने में महसूस किए जा रहे हैं - बाढ़, सूखा, जंगल की आग, समुद्र के जलस्तर में बढ़ोत्तरी - ऐसे समय में पर्यावरण रक्षकों की भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो जाती है। रिपोर्ट कुछ अहम सुझाव भी देती है - जैसे पर्यावरण रक्षकों की सुरक्षा के लिए विशेष कानून बनाना, उनके खिलाफ दमनकारी मुकदमों को रोका जाना और जिम्मेदार कंपनियों की जवाबदेही तय करना, लेकिन यह तभी संभव है जब नागरिक समाज, मीडिया और आम जनमानस इन मुद्दों को अपने विमर्श के केंद्र में लाएं। हाल ही में 'इंटरनेशनल कोर्ट ऑफ जस्टिस' (आईसीजे) ने एक ऐतिहासिक निर्णय में कहा है कि जलवायु संकट से निपटना सभी देशों की कानूनी ज़िम्मेदारी है। यह फैसला बताता है कि अब जलवायु परिवर्तन केवल पर्यावरणीय नहीं, बल्कि मानवाधिकार और अंतरराष्ट्रीय कानून का भी गंभीर मुद्दा बन चुका है। उम्मीद की जा रही है कि इससे उन लोगों को कुछ राहत मिलेगी जो पर्यावरण की रक्षा के लिए खतरों का सामना कर रहे हैं। **(सप्रेस)**

सरसों की उन्नत खेती

- सीता चौधरी, विषय वस्तु विशेषज्ञ
- डॉ. एन. के. मीना, विषय वस्तु विशेषज्ञ
- एम. पी. सिंह, विषय वस्तु विशेषज्ञ
- डॉ. आर. के. सिंह, प्रधान वैज्ञानिक

कृषि विज्ञान केंद
भाकृअनुप – केन्द्रीय कृषि अभियांत्रिकी संस्थान, भोपाल
ई–मेल : sitachoudhary110@gmail.com

सरसों और राई भारत की प्रमुख तिलहनी फसलों में शामिल हैं। राजस्थान में सरसों की खेती भरतपुर, सवाई माधोपुर, अलवर, करौली, कोटा, और जयपुर जैसे जिलों में व्यापक रूप से की जाती है। यह फसल कम लागत में अधिक लाभ देने वाली होती है। सरसों के हरे पौधों को पशुओं के लिए हरे चारे के रूप में तथा बीज, तेल और खली को पशुओं के आहार के रूप में उपयोग किया जाता है। इसकी खली का शीतल प्रभाव होने के कारण यह कई रोगों की रोकथाम में सहायक होती है। खली में निम्न पोषक तत्व नाइट्रोजन: 4–9%, फॉस्फोरस: 2.5% और पोटाश: 1.5% पाए जाते हैं। इन पोषक तत्वों के कारण विभिन्न देशों में जैविक खाद के रूप में भी इस्तेमाल किया जाता है।

सरसों का महत्व और उपयोग

भारत में सरसों एक महत्वपूर्ण तिलहनी फसल है। इसके बीज से 30–48% तक तेल प्राप्त होता है। इसके तेल का उपयोग खाना पकाने, मालिश करने, साबुन और ग्रीस बनाने, फल और सब्जियों के संरक्षण के लिए किया जाता है।

जलवायु

सरसों की खेती के लिए शरद ऋतु (रबी मौसम) आदर्श होती है। फसल के लिए 18–25 डिग्री सेल्सियस का तापमान उपयुक्त है। फूल आने के समय अधिक आर्द्रता, बारिश, और बादल फसल के लिए हानिकारक हो सकते हैं। इन परिस्थितियों में माहू या चौपा कीट का प्रकोप बढ़ सकता है।

मृदा

रेतीली से लेकर भारी मटियार मिट्टी में सरसों की खेती संभव है। बलुई दोमट मिट्टी सबसे उपयुक्त मानी जाती है। मिट्टी हल्की क्षारीय हो सकती है। लेकिन अम्लीय मिट्टी फसल के लिए हानिकारक होती है।

खेत की तैयारी

सरसों की खेती के लिए मुरमुरी (भुरभुरी) मृदा सर्वोत्तम होती है। खरीफ की फसल कटने के बाद एक गहरी जुताई करें, फिर 3–4 बार देसी हल से जुताई कर के पाटा लगा कर खेत को समतल और भुरभुरा बनाना आवश्यक है। असिंचित क्षेत्रों में खरीफ के मौसम में खेत खाली छोड़ने से जल संरक्षण में मदद मिलती है। दीमक और अन्य कीटों के प्रकोप को रोकने के लिए अंतिम जुताई के समय क्विनालफॉस 1.5 प्रतिशत चूर्ण 25 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से डालें। एजोटोबैक्टर और पी.एस.बी. कल्चर (2–3 किलोग्राम) को 50 किलोग्राम सड़ी हुई गोबर की खाद या वर्मीकम्पोस्ट में मिलाकर अंतिम जुताई के समय खेत में डालें।

बुवाई

सरसों की बुवाई के लिए 25–26°C तापमान आदर्श रहता है। बारानी क्षेत्रों में 15 सितंबर से 15 अक्टूबर तक सरसों की बुवाई करें और सिंचित क्षेत्रों में अक्टूबर के अंत तक बुवाई कर सकते है। 15 अक्टूबर से पहले सरसों की बुवाई करने से एफिड या माहू का प्रकोप कम आता है। कतारों में बुवाई करे। कतार से कतार की दूरी 30 सेमी व पौधों से पौधों की दूरी 10 सेमी रखें। बीज की गहराई सिंचित क्षेत्र में 5 सेमी तथा असिंचित क्षेत्र में नमी के अनुसार रखें।

बीज की मात्रा

शुष्क क्षेत्रों में 4–5 किलोग्राम तथा सिंचित क्षेत्रों में 2.5 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर बीज की मात्रा पर्याप्त होती है। बुवाई से पहले बीज को 2.5 ग्राम मैन्कोजेब प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचारित करें।

खाद एवं उर्वरक प्रबंधन

सिंचित क्षेत्रों में 8–10 टन प्रति हेक्टेयर सड़ी हुई गोबर की खाद बुवाई से 4 सप्ताह पहले तथा बारानी क्षेत्रों में 4–6 टन सड़ी खाद वर्षा से पहले प्रति हेक्टेयर खेत में समान रूप से डालें। सिंचित क्षेत्र के लिए नत्रजन (नाइट्रोजन) 80 किलोग्राम, फॉस्फोरस 30–40 किग्रा और गंधक (जिप्सम) 60 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से प्रयोग करे। नत्रजन की आधी मात्रा और फॉस्फोरस की पूरी मात्रा बुवाई के समय दें। तथा शेष नत्रजन पहली सिंचाई के समय दें।

सिंचाई प्रबंधन

यदि वर्षा पर्याप्त हो तो सिंचाई की आवश्यकता नहीं होती। जल की कमी होने पर कम से कम 2 सिंचाई करें। पहली सिंचाई बुवाई के 30–40 दिन बाद, दूसरी सिंचाई (फली बनते समय) 70–80 दिन बाद। यदि जल सीमित हो तो केवल एक सिंचाई (फूल आने के समय) 40–50 दिन की फसल में करें।

निराई–गुड़ाई और खरपतवार प्रबंधन

बुवाई के 20–25 दिन बाद पहली निराई करें। छंटाई के द्वारा पौधों की संख्या नियंत्रित करें, और पौधों के बीच 8–10 सेमी की दूरी रखें। सिंचाई के बाद गुड़ाई करें। इससे खरपतवार नियंत्रित होता है और मिट्टी में नमी संरक्षित रहती है।

फसल कटाई

सरसों की फसल 120 से 150 दिनों में पककर तैयार हो जाती है। जैसे ही पौधों की पत्तियाँ और फलियाँ पीली पड़ने लगें तुरंत कटाई करें। समय पर कटाई न करने पर फलियाँ चटकने लगती हैं, जिससे उपज में 5–10% तक की कमी हो सकती है।

उत्पादन

असिंचित में 15–20 क्विंटल तथा सिंचित क्षेत्रों में 20–30 क्विंटल प्रति हेक्टे. उपज प्राप्त होती है।

निष्कर्ष

सरसों की उन्नत खेती के लिए सही प्रजाती का चयन, उचित भूमि की तैयारी, संतुलित उर्वरक प्रबंधन, कीट एवं रोग नियंत्रण जरूरी है। आधुनिक तकनीको एवं वैज्ञानिक तरीकों को अपनाकर उपज में वृद्धि की जा सकती है। जिससे किसानो की आय में सुधार होगा।

सरसों की उन्नत किस्में

डीआरएमआर 1165–40 (रुक्मणी)– यह सरसों की एक उन्नत किस्म है इसके पौधे की ऊंचाई 177–196 सेमी होती है। इसकी उत्पादन क्षमता 22–26 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है। इसके बीजों में तेल की मात्रा 40 से 42.5 प्रतिशत तक होती है। यह सरसों किस्म 135–151 दिन में तैयार हो जाती है। सिंचित और असिंचित दोनों ही स्थितियों में सरसों की यह किस्म बेहतर पैदावार देती है।

डीआरएमआरआईसी 16–38 (बृजराज) – सिंचित क्षेत्रों में देर से बुवाई के लिए उपयुक्त है। इसके पौधे की ऊंचाई 188 से 197 सेमी और बीज आकार 2.9 से 5.0 ग्राम है। यह किस्म 120 से 149 दिन की अवधि में परिपक्व हो जाती है। और इसमें तेल की मात्रा 37.6 से 40.9 प्रतिशत होती है। इसकी उत्पादन क्षमता 16 से 18 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है। इसमें अल्टरनेरिया पत्ती झुलसा, सफेद जंग, तना सड़न, चूर्णी फफूंद और एफिड का प्रकोप भी कम होता है।

डीआरएमआर 2017–18 (राधिका)– सिंचित स्थिति में देर से बुआई के लिए सरसों की यह किस्म बेहतर है। DRMR 2017–15 सरसों किस्म की औसत उत्पादन क्षमता 1788 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर है। इसके बीज में तेल की मात्रा 40.7 प्रतिशत तक होती है। इस किस्म की परिपक्वता अवधि 120 से 150 दिन की है। सरसों की इस किस्म में अल्टरनेरिया पत्ती झुलसा, सफेद जंग, तना सड़न, कोमल फफूंद और चूर्णी फफूंद और एफिड का प्रकोप भी कम है।

डीआरएमआर 150–35 (भारतीय सरसों)– इस सरसों की पैदावार क्षमता 18 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है। इसमें तेल की मात्रा 39.8 प्रतिशत तक होती है। पौधे की ऊंचाई 164–186 सेमी और परिपक्वता अवधि 114 दिन होती है।

डीआरएमआरआईजे–31 (गिरिराज) – सरसों फसल की एक उन्नत और प्रमाणित किस्म है। इस किस्म में तेल की मात्रा 39–42.6% तक की होती है। इसकी पैदावार क्षमता 23–28 क्विंटल प्रति हेक्टे. की है। इसके पौधे की ऊंचाई 180–210 सेमी होती है। और परिपक्वता 137–153 दिन की है।

आर एच 30 – यह किस्म सिंचित और असिंचित दोनों परिस्थितियों के लिए उपयुक्त है। गेहूं, चना, और जौ के साथ अंतरवर्तीय फसल के लिए आदर्श। पौधों की ऊँचाई लगभग 196 सेंटीमीटर, शाखाएँ 5 या अधिक। पकने का समय 120–130 दिन। उपज 20–25 क्विंटल प्रति हेक्टेयर ।

टी–59 (वरुणा)– यह 8 प्राथमिक शाखाओं वाली देर से बुवाई के लिए उपयुक्त है। फूल आने का समय 45–50 दिन व पकने का समय 130–135 दिन है। तेल की मात्रा 36% , उपज 15–18 क्विंटल प्रति हेक्टेयर (असिंचित)। दाने मोटे और काले रंग के। मोयले के प्रकोप से बचने के लिए 15–20 अक्टूबर तक बुवाई करें।

पूसा बोल्ड – इस किस्म की ऊँचाई मध्यम व फलियाँ मोटी होती है। पकने का समय 130–140 दिन होता है। तेल की मात्रा 37–38% व उपज 20–25 क्विंटल प्रति हेक्टेयर होती है।

बायो 902 (पूसा जयकिसान)– यह रोग प्रतिरोधी किस्म होती है। इसमें सफेद रोली और मुरझान रोगों का प्रकोप कम होता है। पौधे की ऊँचाई 160–180 सेमी होती है। पकने का समय 130–140 दिन होता है। तेल की मात्रा 38–40% व उपज 18–20 क्विंटल प्रति हे. होती है तथा इसका दाना झड़ता नहीं व कालापन लिए भूरे रंग का होता है।

औषधीय गुणों से भरपूर लहसुन

● डॉ. आईएस नरुका ● डॉ. आरके शर्मा
● डॉ. आरपी पटेल, मो. : 9425977306

पकी हुई गोबर खाद को खेत में अंतिम तैयारी के समय भूमि में मिला देना चाहिए। इसके अलावा 260 किलो यूरिया, 375 किलोग्राम फास्फोरस एवं 60 किलोग्राम पोटाश एवं 375 किलोग्राम गंधक प्रति हेक्टेयर देना चाहिए। नाइट्रोजन की एक तिहाई तथा फास्फोरस एवं पोटाश की संपूर्ण मात्रा बुआई के समय दें। शेष नाइट्रोजन की मात्रा को बराबर हिस्सों में बुआई के 20-25 एवं 40-45 दिन बना देना लाभदायक है।

औषधीय गुणों से भरपूर लहसुन के निर्यात से अपार विदेशी मुद्रा अर्जन की प्रबल संभावनायें हैं क्योंकि लहसुन उत्पादन के क्षेत्र में मध्यप्रदेश देश में अव्वल है। परंतु हमारी उत्पादकता काफी कम है, जिसके मूल में कृषकों की उन्नत तकनीकों के प्रति जानकारी का अभाव है।

भूमि

मध्यम काली दोमट भूमि जिसमें जीवों में पदार्थ तथा पोटाश भरपूर हो, साथ ही जहां जल निकासी सही हो।

भूमि की तैयारी

खेत तैयार करने के लिए ट्रैक्टर या देशी हल की सहायता से भूमि की हल्की जुताई करें क्यों लहसुन की जड़ें भूमि में 10-12 सेमी से अधिक गहरी नहीं जाती है। इसके बाद आड़ा बखर चलाकर भूमि को भुरभुरा बनाएं और पाटा चलाकर खेत समतल कर लें। इस प्रकार तैयार खेत में अपनी सुविधानुसार उचित आकार की क्यारियां और सिंचाई की नालियां बना लें।

प्रमुख किस्में

एग्रीफाउण्ड सफेद (जी-41), यमुना सफेद (जी-1), यमुना सफेद-2 (जी-50), यमुना सफेद-3 (जी-282), एग्रीफाउण्ड पार्वती, यमुना सफेद-4 (जी-323)

खाद एवं उर्वरक

लहसुन की अच्छी पैदावार लेने के लिए 15-20 टन प्रति हैक्टेयर

बीज एवं बुआई

सामान्यतः सितम्बर-अक्टूबर लहसुन लगाने का उचित समय है। लहसुन की बुआई इसकी कलियां द्वारा होती है। प्रत्येक कंद में औसतन 15-20 कलियां होती हैं। बुआई से पूर्व कलियों का सावधानीपूर्वक अलग कर लें। परंतु ध्यान रखें कि कलियों के ऊपर की सफेद पतली झिल्ली को नुकसान न हों। बुआई के लिए 8-10 मिमी, रोगरहित, सुगठित कलियों का ही चुनाव करें। प्रयोगों से यह सिद्ध हो चुका है कि कलियों से अधिकतम उपज प्राप्त होती है। इस बात का ध्यान अवश्य रखें की कंद के बीच लंबी, बेलनाकार कलियों को न लगाएं क्योंकि इस प्रकार की कलियों से अल्प विकसित कंद प्राप्त होते है। बुआई से पूर्व कलियों को फफूंदनाशक दवा (बाविस्टीन) 2 ग्राम प्रति लीटर पानी के घोल में 2 मिनट तक डुबोकर उपचारित करें। एक हेक्टेयर क्षेत्र के लिए लगभग 4.5-5 क्विंटल कलियों की आवश्यकता होती है।

तैयार क्यारियों में 10-15 सेमी दूरी पर लाइने बना लें इन लाइनों में 8-10 सेमी दूरी पर कलियों की बुआई करें। कलियों को 5 से 7 सेमी की गहराई पर नुकीला भाग ऊपर रखकर बुवाई करते हैं।

सिंचाई

लहसुन की बुआई के तुरंत बाद सिंचाई अवश्य करना चाहिए ताकि कलियों का अंकुर अच्छा हो सकें। ध्यान रखे की पौधों की प्रारंभिक अवस्था में भूमि में नमी की कमी न हो वरना पौधे की वृद्धि पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। लहसुन की कोशिकायें बड़ी या पतली सतह वाली होने के कारण इसके पौधों से जल का उत्स्वेदन अधिक होता है। अतः पौधों से हुई जल की कमी की पूर्ति के लिए शीघ्र सिंचाई करने की आवश्यकता है।

खरपतवार नियंत्रण

खेत को खरपतवार रहित रखने के लिए पहली निराई-गुड़ाई बुआई के 20-25 दिन बाद तथा दूसरी 40-50 दिन बाद करनी चाहिए। पेंडीमिथालीन 1.5 लीटर प्रति हेक्टेयर सक्रिय तत्व लहसुन की बुआई के एक दिन बाद डालने से खरपतवार नियंत्रित होते हैं तथा कंदों की अच्छी उपज प्राप्त होती है।

खुदाई

लहसुन के कंद 130-180 दिन में खोदने वाले हो जाते है। इसका पौध जब ऊपर से सूखकर झुकने या गिरने लगता है तो यही अवस्था लहसुन की खुदाई के लिए उपयुक्त होती है। इस अवस्था में प्राप्त कंद अच्छी गुणवत्ता वाले होते हैं।

अश्वगंधा उगायें लाभ कमायें

● डॉ. सुधीर सिंह भदौरिया ● डॉ. प्रद्युम्न सिंह
email : dtpmasters@yahoo.co.in

अश्वगंधा विथानिया सोमनीफेस सोलेनेसी कुल का पौधा है तथा यह लगभग समस्त भारत में पाया जाता है। अधिकतर यह राजस्थान, म.प्र., गुजरात, उत्तरप्रदेश, छत्तीसगढ़, पंजाब, महाराष्ट्र, कर्नाटक, पश्चिम बंगाल, केरल एवं हिमाचल के पर्वतों पर 1600 मीटर ऊंचाई तक पाया जाता है। भारत के अतिरिक्त यह औषधीय पौधा जॉर्डन पूर्वी अफ्रीका, मिस्त्र, पाकिस्तान के ब्लूचिस्तान प्रांत में, श्रीलंका, स्पेन, मोरक्को में भी पाया जाता है। यदि इसके ताजे पत्ते तथा जड़ को मसल कर सूंघें तो उनसे घोड़े के मूत्र जैसी गंध आती है। इसी कारण से इसका नाम अश्वगंधा रखा गया है। पत्ते हल्के हरे रंग के, सफेद रोयेंदार तथा अंडाकार होते हैं। फूल पत्रकोण से निकलकर, शाखाओं के अग्रभाग पर दिसम्बर से मार्च तक आते हैं। फल गोलाकार तथा रसभरी के समान होते हैं। फल के अंदर असंख्य बीज होते हैं। इसकी जड़ मूली की तरह लेकिन पतली होती है। जिसकी मोटाई 2.5 से 4.0 से.मी. तक तथा लंबाई 30 से 50 से.मी. तक होती है। यह जंगलों में भी बहुत मिलता है परंतु उगाई गई अश्वगंधा की जड़ें अच्छी होती हैं।

भूमि

इसकी खेती के लिये बलुई दोमट से हल्की रेतीली भूमि जिसका पी.एच. 7 से 8 हो तथा जल निकास की पर्याप्त व्यवस्था हो, उपयुक्त रहती है। निम्न भूमि में भी अश्वगंधा की खेती से संतोषजनक उपज ली जा सकती है।

खेत की तैयारी

डिस्क हैरो या देशी हल से दो या तीन बार अच्छी तरह जुताई करके सुहागा लगाकर खेत को समतल बना लें। खेत में खरपतवार ढेले नहीं होने चाहिए।

किस्म

जवाहर अश्वगंधा-20, जवाहर अश्वगंधा-134 किस्में मुख्य हैं। सीमेप ने भी पोषिता किस्म विकसित की है।

बोने का समय

अश्वगंधा की बुवाई के समय खेत में अच्छी नमी होनी चाहिये। जब एक-दो बार वर्षा हो जाती है तथा खेत की जमीन अच्छी तरह से संतृप्त हो जाये तभी बुवाई करनी चाहिए। अगस्त का महीना अश्वगंधा की बुवाई के लिये उत्तम है। सिंचित अवस्था में उसकी बिजाई सितम्बर के महीने में भी कर सकते हैं।

बीज की मात्रा

अगर बिजाई छिटककर की जाती है तो लगभग 4 किलो बीज की आवश्यकता होती है। लाईनों में बिजाई करने से बीज की मात्रा कम लगती है। नर्सरी में बुवाई करने के लिये 2 किलो बीज प्रति एकड़ काफी होता है।

बोने की विधि

सीधे बीज से अश्वगंधा की बिजाई अधिकतर छिड़काव द्वारा की जाती है। बीजों को बोने से पहले नीम के पत्तों के काढ़े से उपचारित करें। जिससे फफूंदी आदि से हानि न होने पाये। अश्वगंधा अच्छी फसल के लिये कतार के कतार का फासला 20 से 25 से.मी. तथा पौधे से पौधे का 4-6 से.मी. होना चाहिये। बीज 2-3 से.मी. से अधिक गहरा नहीं होना चाहिये। इससे एक एकड़ में लगभग 3-4 लाख पौधे लग सकते हैं। बुवाई के लगभग 15 दिनों बाद अंकुरण निकलने शुरू हो जाते हैं। नर्सरी के पौधे तैयार करके भी खेत में लगाये जा सकते हैं तथा 6-7 सप्ताह बाद पौधों को नर्सरी से खेत में लगा दिया जाता है। जिससे लाइन से लाइन का फासला 20-25 से.मी. तथा पौधे से पौधे का फासला 4-6 से.मी. रखना चाहिये। एक एकड़ नर्सरी के लिये 200 वर्गमीटर क्षेत्रफल काफी होता है। नर्सरी में क्यारियां 1.5 मीटर चौड़ी तथा लंबाई सुविधानुसार रखकर बनाएं। नर्सरी जमीन से 15-20 से.मी. उठी हुई हो तथा अच्छे जमाव के लिये नर्सरी में नमी बनाएं रखें?

खाद

अच्छी फसल लेने के लिये खेत की तैयारी के समय 8-10 टन गोबर की अच्छी गली-सड़ी खाद मिला दें।

सिंचाई

अश्वगंधा की फसल को पानी में अधिक आवश्यकता नहीं होती व वर्षा समय पर न हो तो अच्छी फसल लेने के लिये 2-3 सिंचाई करें।

निराई - गुड़ाई - अश्वगंधा की अच्छी फसल के लिये समय-समय पर खरपतवार नियंत्रण करें ताकि जड़ों को अच्छी बढ़त हो सके। इसके लिये बिजाई के 25-30 दिन बाद खुरपे से तथा 45-50 दिन बाद कसौले से गुड़ाई करें। अगर दो या अधिक पौधे एक साथ हो तो छंटाई भी कर दे।

मृदा सुधार का आधार व किसानों का मित्र केंचुआ खाद

● घनश्याम बामनिया ● कीर्ति मालवीय
● दीपिका मालवीय
mailto:ghanshyam95755@gmail.com

केंचुआ खाद क्या है

केंचुओं के प्रयोग द्वारा अपघटन शील कार्बनिक पदार्थों जैसे- कूड़ा-करकट, आधा सड़ा गोबर, कृषि अवशेष, भूसा, सूखी घास, धान का पुआल, सब्जियों के छिलके आदि से तैयार खाद को केंचुआ खाद कहते हैं। इसके अलावा किसी अन्य तरीके से खाद बनाने में अधिक समय लगता है, और इनमें पोषक तत्वों की हानि होने का खतरा रहता है। केंचुओं के द्वारा निर्मित खाद में पोषक तत्वों की मात्रा भरपूर होती हैं। केंचुआ खाद एक प्राकृतिक, प्राचीन एवं उत्तम जैविक खाद हैं। यह प्राकृतिक जैविक उत्पाद है, जिसका मृदा व कृषि उत्पाद में किसी प्रकार से हानिकारक अवशेष नहीं रहता है।

तकनीक

केंचुए कई तरह के कार्बनिक अपशिष्ट पदार्थों को खाकर उसके आयतन को 40 से 60 प्रतिशत तक घटा देते हैं। केंचुआ अपघटन सील अपशिष्ट कार्बनिक पदार्थों जैसे भूसा, सूखी घास आदि को तेजी से खाकर वर्मी कास्ट के रूप में विसर्जित करता है। यही केंचुआ खाद कहलाता है। केंचुआ खाद में वर्गीकास्ट के अतिरिक्त केंचुए का मल, अण्डे, कोकून, लाभकारी सूक्ष्म जीवाणु, मुख्य एवं सूक्ष्म पोषक तत्व और अपचित जैविक पदार्थों का मिश्रण सम्मिलित रहता है। केंचुआ खाद मृदा को अधिक समय तक उपजाऊ एवं कृषि हेतु उपयोगी बनाता है। केंचुओं की विभिन्न प्रजातियों में से यूड्रिलस यूजिनी, आईसीनिया फेटिडा, फेरियोनिक्स एक्सकवेट्स और पेयिोनिकस सन्सीवेरिकस प्रजातियाँ मुख्य रूप से केंचुआ खाद बनाने में इस्तेमाल होती हैं।

केंचुआ खाद बनाने की सामग्री

2 फुट ऊँचा टाका, (लंबाई एवं चौड़ाई आवश्यकतानुसार), कार्बनिक अपशिष्ट पदार्थ जैसे-भूसा, पेड़ों की पत्तियाँ, खरपतवार आदि गोबर, रॉक फास्फेट (फास्फोरस युक्त केंचुआ खाद हेतु) प्रौढ़ केंचुए (1 किग्रा./क्विंटल अपशिष्ट पदार्थ), पानी आदि।

इन बातों का विशेष ध्यान रखें

● टांके में भरने से पहले कार्बनिक पदार्थों को छोटे-छोटे टुकड़ों में बारीक कर लें।

● ध्यान रहे कि पदार्थ टांका भराई से पहले कार्बनिक पदार्थों में से कांच, पत्थर, धातु, प्लास्टिक रबर, आदि अलग कर लें।

● कार्बनिक पदार्थ और गोबर का अनुपात 1:2 रखें।

● कार्बनिक पदार्थ और गोबर के मिश्रण को एक महिने तक टांके में रखें जिससे उसकी गरमी निकल जाती है। और केंचुओं के लिए पोषक वातावरण का निर्माण होता है।

● किसी भी स्थिति में एक महिने से पहले मिश्रण में केंचुए ना छोड़ें। अधिक तापमान की वजह से केंचुए मर जाते हैं।

● केंचुआ की मात्रा आधा से एक किग्रा. प्रति क्विंटल कार्बनिक पदार्थ होनी चाहिए।

● टांके में 40-50 प्रतिशत की नमी को बनाए रखें।

● अधिक नमी से हवा अवरुद्ध हो जाती है जिससे केंचुए की क्रियाशीलता कम हो जाती है।

● टांके को धूप तथा वर्षा से बचाने हेतु छप्पर बनाएं।

● टांका पेड़ों की छाया में बनाएं जिससे तापमान सामान्य एवं अनुकूल बना रहे।

● टांके के पास स्थाई पानी का स्त्रोत होना आवश्यक है।

● ध्यान रहे कि खाद निकालते समय उसमें केंचुए ना हो। ऐसी स्थिति में केंचुओं को पुनः टांके में डालें।

केंचुआ खाद में पोषक तत्वों की मात्रा

पोषक तत्व	मात्रा का प्रतिशत
नाइट्रोजन	15-19 प्रतिशत
फास्फोरस	1.8-20 प्रतिशत
पोटेशियम	0.6-0.9 प्रतिशत

इसके अलावा केंचुआ खाद में सूक्ष्म पोषक तत्व एवं जीव रासायनिक पदार्थ भी अच्छे पाये जाते हैं।

केंचुआ खाद बनाने की विधि

● सर्वप्रथम टांके को अच्छी तरह से साफ करें।

● केंचुआ खाद बनाने के लिए एकत्रित अपशिष्ट पदार्थों को छोटे-छोटे टुकड़ों में काट लें।

● ताजा गोबर और अपशिष्ट पदार्थों को 2:1 के अनुपात में अच्छी तरह से मिला लें। जैसे 100 किग्रा. अपशिष्ट पदार्थों के लिए 200 किग्रा. गोबर की आवश्यकता होगी।

● अनुपात में मिलाए हुए पदार्थों को टांके में भरें।

● टांके में पानी का छिड़काव करके 40 प्रतिशत नमी बरकरार रखें।

● 15 दिन के बाद मिश्रण को अच्छी तरह से मिलाकर पलटाएं।

● तकरीबन एक महिने बाद मिश्रण को दोबारा मिलाकर पलटाएं।

● अब टांके में प्रौढ़ केंचुए 1/2 से 1 किग्रा. प्रति क्विंटल कार्बनिक पदार्थ के हिसाब से लें।

● कैर्जी को डालने के उपरान्त इसके ऊपर गोबर, पत्ती आदि की 6 से 8 इंच की सतह बनानी चाहिए।

● इसके बाद टांके को टाट-पट्टी से ढ़ांक दें।

● झारी से टाट-पट्टी पर आवश्यतानुसार पानी छिड़कते रहें ताकि 50 से 55 प्रतिशत तक नमी बनी रहे।

● केंचुए डालने के 90-100 दिन बाद टांके में चायपत्ती समान, मिट्टी समान साँची संघवाली एवं अच्छी गुणवत्ता की केंचुआ खाद तैयार हो जाती है।

● खाद को टांके से निकालने के लिए आठ दिन पूर्व से पानी का छिड़काव बंद कर दें।

● टांके में ही खाद के छोटे-छोटे ढेर बना दें जिससे केंचुए खाद की निचली सतह में चले जाते हैं। केंचुआ खाद को छत से अलग करके सुरक्षित जगह पर संवाहित करें।

● संवाहित केंचुआ खाद को फसल की जरूरत के अनुसार उपयोग करें।

प्रसव के बाद मादा पशु का रखरखाव

प्रसव की अवस्थाएं

(1) प्रथम अवस्था में मादा पशु लगभग 10-12 घंटे का समय लेता है इस अवस्था में बच्चे की प्रथम पानी की थैली जिसे सामान्य भाषा में मटाडी कहते हैं बाहर निकलती हैं।

(2) द्वितीय अवस्था में बच्चा बाहर आता है, इस अवस्था में लगभग आधे से तीन घंटे का समय लग सकता है।

(3) तृतीय अवस्था में पलेसेंटा (जेर या मैली) बाहर आती है, इस अवस्था में लगभग 8-10 घंटे का समय लग सकता है।

पशुपालक इन बातों का ध्यान रखें

प्रसव होते समय मादा पशु को एकांत में छोड़ दें और सामान्य प्रसव होने दें।

कुछ पशुपालक जैसे ही बच्चे के पैर दिखाई देते है तो उनको खींचने लग जाते है तो इस दौरान ये जल्दबाजी नहीं करनी चाहिए, पशु को आराम से ब्याने दें , जब बच्चे के दोनों पैर और सिर दिखाई देने लग जाए तब अगर आवश्यकता हो तो पशुपालक अपने हाथ को साबुन से धोकर बच्चे को बाहर खींच सकता हैं या कभी-कभार बच्चे के पैरों में रस्सी बांधकर भी

खींच सकता है इस दौरान पशुपालक हाथों पर मिट्टी का उपयोग नहीं करें।

ब्याने में कठिनाइयां

अगर मादा पशु, प्रसव में ज्यादा समय ले रहा है लगभग 15 घंटे से ज्यादा समय और बार-बार जोर लगा रहा फिर भी बच्चा बाहर नहीं आ रहा है तो इस दौरान हो सकता है आपको बच्चे का केवल एक पैर ही दिखाई दे, या केवल बच्चे का सिर ही दिखाई दे तो इस दौरान बच्चे का पैर या सिर बच्चेदानी में मुड़ा हुआ हो सकता है या बच्चेदानी में आटा आया हुआ हो सकता है तो ऐसी स्थिति में नजदीकी पशु चिकित्सक से संपर्क करें।

मादा पशु की देखभाल

प्रसव के बाद माता को अपने बच्चे को चाटने दे और प्रसव के 1-2 घंटे में बच्चे को मां का दूध पिलाए ऐसा करने से माता के शरीर में ऑक्सीटोसिन का स्राव होता जिससे जेर जल्दी गिरने में सहायता मिलती है।

प्रसव के बाद मादा पशु को गुड़ अजवाइन का काढ़ा पिलाए एवम थोड़ी खल- काकडा थोड़ा गुड़ भी दे सकते हैं ये पशु को ऊर्जा प्रदान करते हैं, साथ ही साथ थोड़ा दलिया एवं मेथी उबाल कर दे सकते हैं।

प्रसव के बाद मादा पशु में मिल्क फीवर होने की संभावना होती है इससे बचने के लिए पशु का पूरा दूध एक साथ नहीं निकालें अगले 2-3 दिन तक थोड़ा-थोड़ा दूध उसकी लेवटी में छोड़े।

जेर नहीं गिरने पर क्या करें

सामान्यतया जेर लगभग प्रसव के 5-6 घंटे में गिर जाती हैं अगर जेर 8-12 घंटे तक भी नहीं गिरती है तो नजदीकी पशु चिकित्सक से संपर्क करें। कुछ पशुपालक जेर (प्लेसेंटा) के वजन बांध देते ह ऐसा करने से बच्चेदानी में सूजन आ जाती है जिससे उसकी प्लेसेंटा भी नही गिर पाती हैं तो ऐसा नहीं करें। प्लेसेंटा के नहीं गिरने की समस्या से बचने के लिए पशुपालक अपनी गाय भैंस को बाजार में कुछ युटेरोंटॉनिक आयुर्वेदिक दवाइयां मिलती है वो हल्के निवाया पानी में 250 मिली तक पीला सकते है।

ऑनलाईन सदस्यता के लिए लॉग इन करें
www.krishakjagat.org

समस्या- फूल गोभी की विभिन्न परिस्थितियों में लगने वाली जातियों का उल्लेख करें ताकि उन्हें समय से लगाया जा सके।

- रामसेवक चौधरी

समाधान -फूलगोभी की कास्त के लिये उसकी

नर्सरी मई-जून में ही डाल दी जाती है और मौसम देखकर रोपाई शुरू करके अगेती फसल ली जाती है। सितम्बर से जनवरी तक लगाई जाने वाली किस्म निम्नानुसार है।

- माह नवम्बर में तैयार होने वाली किस्में पूसा शरद, इम्प्रूव्ड जापानी, सलेक्शन 235, सी 12।
- दिसम्बर माह में तैयार होने वाली किस्में पूसा सिंथेटिक, पूसा शुभ्रा, पूसा अगहनी, पंत गोभी 4, पंजाब ज्वाइंट तथा हिसार 1।
- जनवरी और उसके बाद की पिछेती किस्में पूसा स्नोबाल, पूसा स्नोबाल 1, पूसा स्नोबाल 2, पूसा स्नोबाल 16।

समस्या- मैं अपने खेत में अमरूद लगाना चाहता हूं कृपया रोपण संबंधित तकनीकी बतायें।

- रघुनन्दन सिंह

समाधान- अमरूद लगाने का उपयुक्त समय

जून माह है जहां पानी की सुविधा हो वहां फरवरी में भी लगाया जा सकता है। एक बार लगाने के बाद अमरूद वर्षों फल देता रहता है आप भी लगायें। परंतु तकनीकी अपनाकर -

- अच्छे जल निथार वाली गहरी मिट्टी उपयुक्त होती है।
- बीज/वनस्पति का प्रवर्धन द्वारा अच्छे पौधे तैयार किये जा सकते हैं। बीज से तैयार पौधों की तुलना में वानस्पतिक प्रवर्धन के पौधे अच्छे तथा जल्दी फल देते हैं।
- जातियों में इलाहाबाद सफेद, कोहिनूर सफेद, सफेद जाम, अर्का मृदुला, अर्का अमूल्य।
- अच्छी तरह से जुती तथा समतल भूमि में 1 मीटर के चौड़े, लम्बे तथा गहरे गड्ढे बनवायें। प्रत्येक गड्ढों में 30 किलो गोबर खाद भरें।
- प्रत्येक गड्ढों में 20 किलो नीम की खली भी डाले।
- वार्षिक रखरखाव स्वरूप रसायनिक उर्वरक भी दिया जाये।
- बरसात छोड़कर 10 दिनों के अंतर से सिंचाई की जाये।

समस्या- मैं पत्तागोभी की कास्त करना चाहता हूं। कौन सी जाति, कितना बीज, कृपया विस्तार से लिखें।

- ताराचन्द्र

समाधान- आपका प्रश्न सामयिक है पत्तागोभी

लगाने का समय चल रहा है। नर्सरी डालें या तैयार पौध यदि मिल सके तो उसे लेकर मुख्य खेत में रोपाई करके शीघ्र फसल तैयार करके लाभ कमायें आपको निम्न तकनीकी अपनानी होगी।

- इसके लिये बालुई दोमट भूमि उपयुक्त होगी।
- जातियों में गोल्डन एंकर, प्राईड आफ इंडिया, पूसा ड्रेमहेड,बहार, प्रगति, शताब्दी, बरखा आदि लगायें।
- इसकी लाल किस्म भी मिलती है रेड राक, लार्जरेड, रेड जिनिस, रेड हेड एवं रूबी लाल।
- बीज की मात्रा 300-600 ग्राम/हे. बीज की इस मात्रा से प्राप्त पौधे से एक हेक्टर में रोपाई की जा सकती है।
- बीज का उपचार गर्म पानी में करने से अच्छा अंकुरण होता है 5 डिग्री से. ग्रे. पानी में आधा घंटा तक बीज को डुबोने के बाद सुखाकर रोपणी में डालें।
- शीघ्र पकने वाले किस्मों को कतार से कतार 45×45 तथा पौध से पौध 30×30 से.मी. रखें। मध्यम तथा देरी से आने वाली किस्मों को कतार से कतार 60×60 तथा पौध से पौध 45×45 से.मी. दूरी रखें।
- गोबर की खाद 200 क्विं. के साथ यूरिया 300 किलो, सिंगल सुपर फास्फेट 500 किलो तथा म्यूरेट ऑफ पोटाश 66 किलो/हे. की दर से डालें।

समस्या- गांठ गोभी कब लगाई जाती है पूरी तकनीकी से अवगत करायें।

- सुरेश चौधरी

समाधान- आप गांठ गोभी लगाना चाहते हैं। यह समय उसे लगाने का चल रहा है। आप को निम्न तकनीकी अपनानी होगी।

- बालुई दोमट भूमि उपयुक्त होती है।
- किस्मों में सफेद वियना तथा परपल वियना प्रमुख है।
- बुआई का समय अगस्त से नवम्बर।
- 1 से 1.5 किलो की नर्सरी में लगाये पौध एक हेक्टर के लिये पर्याप्त होगें।
- भूमि की तैयारी अच्छी तरह करके 5×3 मीटर की क्यारियों में पौध रोपण करें।
- यूरिया 300 किलो, सिंगल सुपर फास्फेट 500 किलो तथा म्यूरेट ऑफ पोटाश 60 किलो प्रति हेक्टर।
- यूरिया की आधी मात्रा स्फुर, पोटाश की पूरी मात्रा पौध रोपण के समय डालें शेष आधी मात्रा बराबर 4 भागों में बांटकर टाप ड्रेसिंग करें।
- सिंचाई 10 से 15 दिनों के अंतर से की जाये।

समस्या- मेरे पास 7 बीघा जमीन है मैं चना लगाना चाहता हूं अच्छे उत्पादन के लिये महत्वपूर्ण बिन्दु बतायें।

- झुमकलाल, बनखेड़ी

समाधान- आप चने की कास्त करना चाहते हैं अगले माह से रबी फसलों की बुआई का समय आ रहा है। अच्छे उत्पादन के कुछ महत्वपूर्ण बिन्दुओं से आप परिचय करें।

- खेत की तैयारी अच्छी तरह से की जाना

चाहिये। अक्सर साधारण तैयारी करके बोनी निपटाई जाती है।
- सही समय पर बुआई करें अक्टूबर माह उपयुक्त है। सिंचित चना थोड़ी देर से लगाया जा सकता है।
- विकसित जातियां जैसे जे.जी. 315, जे.जी.218, जे.जी. 74, भारती, विशाल, विजय लगायें।
- बीज की बुआई नमी में ही की जाये ताकि अच्छा अंकुरण प्राप्त हो सके।
- पिछली फसल यदि सोयाबीन थी तो कटाई उपरांत खेत में से सोयाबीन के ऊगे पौधों को निकाल दें अन्यथा इल्ली का प्रकोप अधिक होगा।
- संतुलित उर्वरक एवं बीज की मात्रा सिफारिश के अनुरूप ही दें।
- खेत में टी आकार की खूटियां लगायें।
- चना, सरसों चना-अलसी की अंतरवर्तीय फसल लगायें।

निवेदन

समस्या-समाधान स्तंभ में पाठकों से निवेदन है कि अपनी खेती-किसानी संबंधी समस्या कृषि विशेषज्ञों से निराकरण करने हेतु वाट्सएप पर भेजें. एक बार में केवल एक प्रमुख समस्या ही वाट्सएप पर लिखकर भेजें. वाट्सएप हेल्पलाइन नं. 6262166222.

समस्या-समाधान
कृषक जगत 14, इंदिरा प्रेस काम्प्लेक्स,
महाराणा प्रताप नगर, भोपाल (म.प्र.)
फोन-0755-4248100,2554864

कृषक जगत
बागवानी सीरीज

साग-सब्जी उत्पादन उन्नत तकनीक रु. 95 कोड : 016
सब्जियों में पौध संरक्षण रु. 75 कोड : 017
मशरूम एक लाभ अनेक रु. 45 कोड : 019
मिर्च की उन्नत खेती रु. 55 कोड : 020
केला उत्पादन रु. 70 कोड : 025
गुलाब बहुरंगी संशोधित संस्करण रु. 75 कोड : 027
पपीता रु. 55 कोड : 031
अदरक रु. 55 कोड : 032
फलों की खेती रु. 75 कोड : 040
सजाएं फूलों से बगिया रु. 65 कोड : 041
घर की बगिया रु. 95 कोड : 050

डाक द्वारा मंगवाने हेतु निम्नलिखित जानकारी के साथ हमारे पते पर ड्राफ्ट/ मनीऑर्डर के साथ ऑर्डर कीजिए . किताब कोड नं. पर ✔ निशान लगाएं
016 017 019 020 025 027 031 032 034 040 041 050
नाम
ग्राम पोस्ट तह.
जिला फोन/मोबा.
कुल राशि ऑर्डर की गई प्रतियों की संख्या
संलग्न ड्राफ्ट नं. मनी आर्डर रसीद क्र. वी.पी. भेजें
संस्थाओं द्वारा अधिक संख्या में प्रतियां खरीदने पर आकर्षक छूट. अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें.
कृपया ड्राफ्ट या मनीआर्डर कृषक जगत भोपाल के नाम
14, इंदिरा प्रेस काम्पलेक्स, एम.पी. नगर, भोपाल - 462011
फोन : 0755-4248100, 2554864, मो.: 9826255861, Email-info@krishakjagat.org
इंदौर : 331-332, आर्बिट माल, ए.बी. रोड, विजय नगर चौराहे के पास, इंदौर (म.प्र.) मो. : 9826021837

ऑनलाईन सदस्यता के लिए लॉग इन करें
www.krishakjagat.org

घर में ही उगा सकते हैं ऑर्गेनिक तरीके से लौकी

सेहत के लिए फायदेमंद

जिस तरह से बाजारों में मिलावटी खाद्य पदार्थ मिलते हैं ठीक उसी तरह से सेहत के लिए हानिकारक दवाईयों से सब्जियों को भी पकाकर बेचने का सिलसिला जारी है लेकिन अब लोग सावधानी बरतने लगे हैं और ऑर्गेनिक तरीके से उत्पादित सब्जियों को खरीदना पसंद करते हैं।

कृषि वैज्ञानिक यह भी बताते है कि यदि आप घर में ही लौकी और अन्य सब्जियां उगाना चाहते है तो कुछ आसान टिप्स को आजमाया जा सकता है। लौकी जैसी सब्जी की ही बात कर ली जाए तो इसे घर में किसी गमले में ही आसानी से उगाया जा सकता है। ऑर्गेनिक तरीके से उत्पादित लौकी सेहत के लिए भी फायदेमंद रहती है।

अगर आप अपने घर में लौकी उगाना चाहते हैं और उससे अच्छी क्वालिटी की उपज लेना चाहते हैं तो बेहद जरूरी है कि आप इसकी उन्नत किस्मों का चुनाव करें। अच्छी उपज के लिए आप अच्छी किस्म के जैविक बीजों को ले सकते हैं जैसे- पूसा समर प्रोलिफिक या फिर अर्का बहार। ध्यान देने वाली बात ये है कि रोगमुक्त पैदावार के लिए जरूरी है कि आप बुवाई से पहले लगभग 12 घंटे तक बीजों को पानी में भिगोकर रखें ताकि अंकुरण भी जल्दी हो।

लौकी एक बेल वाली सब्जी है इसलिए बढ़ने के साथ-साथ इसकी बेलें फैलती हैं जिसके लिए बड़े गमले की जरूरत पड़ती है। इसके लिए आपको 18 से 24 इंच का गहरा

और चौड़ा गमला या फिर ग्रो बैग लेना होगा। इसके बाद गमले में 50 फीसदी सामान्य मिट्टी, 30 फीसदी गोबर की खाद और 20 फीसदी बालू या फिर कोकोपीट मिलाएं। आपको इस बात का खास खयाल रखना होगा कि गमले में नीचे छेद हो ताकि हवा का संचार न रुके।

गमले में मिट्टी की तैयारी करने के बाद उपचारित किए गए 2 से 3 बीजों को गमले में करीब 1 इंच की गहराई में बोएं। बीज बुवाई के बाद शुरुआत के 2 दिनों में गमले को पानी दें, लेकिन ध्यान रहे कि जरूरत से ज्यादा पानी देने पर बीज सड़ सकते हैं और नुकसान हो सकता है। बता दें कि, बीजों बुवाई के लगभग 6 से 10 दिनों बाद बीज अंकुरित होते हैं।

गमले में लगाए गए लौकी के पौधे को भरपूर मात्रा में पोषण मिले और पौधा अच्छे से ग्रो करे इसके लिए जरूरी है कि पौधे को सही खाद दी जाए। लौकी के पौधे की ग्रोथ के लिए जरूरी है कि आप हर 15 से 20 दिन में गमले में गोबर की खाद या वर्मीकंपोस्ट जरूर डालें। साथ ही आप नीम के तेल का भी इस्तेमाल कर सकते हैं। इसके इस्तेमाल से कीटों को दूर रखने में मदद मिलती है। इसके अलावा जैसे-जैसे आपका पौधा बढ़े वैसे - वैसे उसे किसी जाली पर चढ़ाते जाएं ताकि बेलों को सहारा मिलता रहे.

लौकी के बीजों की बुवाई के करीब 50 से 60 दिनों में पौधे में फल और फूल आना शुरू हो जाते हैं। बाक करें लौकी की कटाई की तो जब लौकी नरम और हल्के हरे रंग की हो तब उसे कटाई करना सही होता है। जरूरत से ज्यादा पक जाने पर लौकी की स्वाद बिगड़ सकता है। बता दें कि, घर पर उगाई गई लौकी से आप करीब 10 से 15 लौकी प्राप्त कर सकते हैं।

बारिश के मौसम में डायरिया से रहें सावधान

बारिश के दिनों में गैस्ट्रोएंट्राइटिस होने पर डायरिया और उल्टियां होने जैसी परेशानियां हो सकती हैं। यह वायरस, बैक्टीरिया या पैरासाइट्स से होता है। इस बीमारी का मुख्य कारण पानी का संक्रमित होना है।

क्या सावधानी बरतें

● हमेशा फिल्टर्ड पानी इस्तेमाल में लाएं। घर में लगे वॉटर फिल्टर की नियमित रूप से सर्विस कराएं।

● इसका कंटेनर अंदर से बिल्कुल सूखा होना चाहिए। इसे नल के पानी से साफ करें। अगर यह अंदर से गीला होगा तो फिल्टर होकर जमा होने वाला पानी नल के पानी से मिक्स होकर संक्रमित होकर संक्रमित हो जाएगा। इसे सामान्य पानी से साफ करने के बाद आखिर में उबले या फिल्टर किए पानी से अंदर से धो लें ताकि यह जर्म्स फ्री हो जाए।

● इसके कंटेनर को नियमित रूप से धोएं। इसे 2-3 दिन के लिए यों ही रखा रहने देने से भी इसके अंदर गंदगी जमा हो जाती है।

● फिल्टर पानी को 24 घंटे के अंदर-अंदर इस्तेमाल करें। इस्तेमाल में लाने के बाद इसके कंटेनर को फिर से साफ करें।

● छोटे बच्चों को फिल्टर के पानी को उबालकर व ठंडा करके पीने के लिए देना चाहिए।

● डेढ़-दो साल के बच्चे को नहलाना भी इसी पानी से चाहिए, क्योंकि नहलाते समय पानी उनके मुंह में चला जाता है। उससे भी डायरिया हो सकता है।

● कई पैरेंट्स बच्चे को गीजर से गरम

किए पानी से यह सोचकर नहला देते हैं कि पानी गरम होने की वजह से जर्म्स फ्री हो गया है। ऐसा न करें।

● हमेशा खाना बनाने से पहले हाथ धोएं। फल-सब्जियां अच्छी तरह साफ कर इस्तेमाल करें।

● बच्चे को भी हाथ धोकर खाना खाने को कहें। छोटे बच्चे दीवारों पर हाथ लगाते हुए चलते हैं और उसी हाथ से खाना खा लेते हैं। इससे भी संक्रमण का खतरा रहता है।

● बच्चे को बाजार से कोई भी कटा फल न खाने को दें और न ही ज्यूस पीने दें। मक्खियों की वजह से संक्रमण हो सकता है।

● मां बच्चों को गर्मियों में दही, छाछ, मट्ठा आदि खूब दें। दही पाचन शक्ति बढ़ाता है और इंफेक्शन से बचाता है।

● बड़े लोगों को डायरिया हो तो वे इलाज कराने पर जल्दी ठीक हो जाते हैं। लेकिन बच्चों को अक्सर ठीक होने में वक्त लग जाता है।

● अगर बच्चे को डायरिया हो जाए तो डॉक्टर से इलाज कराएं। इसमें मुख्य रूप से डिहाइड्रेशन का खतरा रहता है।

आइए जानें रोज क्या खाएं और क्यों खाएं

सेहतमंद और तरोताजा बने रहने के लिए जरूरी है घर के हर सदस्य को पता हो खान-पान संबंधी उपयोगी टिप्स। पेश है आपके लिए कुछ विशेष जानकारियां- ● सूप को भी डाइट में शामिल करना जरूरी है। कोशिश करें कि एक कप लो कैलोरी और लो सोडियम वेजिटेबल सूप एक दिन में पिएं। एक अध्ययन में पाया गया है कि दिन में 2 बार सूप पीने वाला व्यक्ति उसी कैलोरी में स्नैक्स खाने वाले व्यक्ति की तुलना में तेजी से वेट लॉस करता है

● एक मध्यम आकार के शकरकंद में लगभग 100 कैलोरी होती है। शकरकंद में कार्ब्स और बीटा-कैरोटीन होते हैं। इसके अलावा पोटैशियम व मैग्नीशियम जैसे खनिज मौजूद होते हैं। सप्ताह में 2 या 3 बार शकरकंद खाएं।

सेहत के नुस्खे

यदि आप अपनी सेहत बनाने की सोच रहे हैं तो सबसे पहले पेट साफ करने की जरूरत है. पेट में कब्ज रहेगा तो कितने ही पौष्टिक पदार्थों का सेवन करें, लाभ नहीं होगा. भोजन समय पर तथा चबा-चबाकर खाना चाहिए ताकि पाचन शक्ति ठीक बनी रहे, फिर पौष्टिक आहार या औषधि का सेवन करना चाहिए.

आचार्य चरक ने कहा है कि पुरुष के शरीर में वीर्य तथा स्त्री के शरीर में ओज होना चाहिए, तभी चेहरे पर चमक व क्रांति नजर आती है और शरीर पुष्ट दिखता है. हम यहां कुछ ऐसे पौष्टिक पदार्थों की जानकारी दे रहे हैं, जिन्हें किशोरावस्था से लेकर युवावस्था तक के लोग सेवन कर लाभ उठा सकते हैं और बलवान बन सकते हैं-

● सोते समय एक गिलास मीठे गुनगुने गर्म दूध में एक चम्मच शुद्ध घी डालकर पीना चाहिए.

● दूध की मलाई तथा पिसी मिश्री जरूरत के अनुसार मिलाकर खाना चाहिए, यह अत्यंत शक्तिवर्धक है.

● एक बादाम को पत्थर पर घिसकर दूध में मिलाकर खाना चाहिए, यह अत्यंत शक्तिवर्धक है.

● छाछ से निकाला गया ताजा मक्खन तथा मिश्री मिलाकर खाना चाहिए, ऊपर से पानी बिलकुल न पिएं.

● 50 ग्राम उड़द की दाल आधा लीटर दूध में पकाकर खीर बनाकर खाने से अपार बल प्राप्त होता है. यह खीर पूरे शरीर को पुष्ट करती है.

● प्रात: एक पाव दूध तथा दो-तीन केले साथ में खाने से बल मिलता है, क्रांति बढ़ती है.

● एक चम्मच असगंध चूर्ण तथा एक चम्मच मिश्री मिलाकर गुनगुने एक पाव दूध के साथ प्रात: व रात को सेवन करें, रात को सेवन के बाद कुल्ला कर सो जाएं. 40 दिन में परिवर्तन नजर आने लगेगा.

● सफेद मूसली या धोली मूसली का पावडर, जो स्वयं कूटकर बनाया हो, एक चम्मच तथा पिसी मिश्री एक चम्मच लेकर सुबह व रात को सोने से पहले गुनगुने एक पाव दूध के साथ लें. यह अत्यंत शक्तिवर्धक है.

● सुबह-शाम भोजन के बाद सेवफल, अनार, केले या जो भी मौसमी फल हों, खाएं.

● सुबह एक पाव ठंडे दूध में एक बड़ा चम्मच शहद मिलाकर पीने से खून साफ होता है, शरीर में खून की वृद्धि होती है.

● प्याज का रस 2 चम्मच, शहद 1 चम्मच, घी चौथाई चम्मच मिलाकर सेवन करें और स्वयं शक्ति का चमत्कार देखें. ऊपर वर्णित नुस्खे स्त्री-पुरुष दोनों के लिए समान हैं. इन्हें अनुकूल मात्रा में उचित विधि से सुबह-रात को सेवन करना चाहिए.

पाक्षिक पंचांग

15 से 28 सितम्बर 2025
विक्रम संवत् 2082
आश्विन कृष्ण 8/9 से आश्विन शुक्ल 6 तक

दि.	माह	वार		तिथि/त्यौहार
15	सितम्बर	सोम	आश्विन कृष्ण	8/9 मातृ नवमी श्राद्ध
16	सितम्बर	मंगल	----------	10
17	सितम्बर	बुध	----------	11 इंदिरा एकादशी
18	सितम्बर	गुरु	----------	12
19	सितम्बर	शुक्र	----------	13 प्रदोष व्रत
20	सितम्बर	शनि	----------	14
21	सितम्बर	रवि	----------	30 पितृमोक्ष अमावस्या
22	सितम्बर	सोम	आश्विन शुक्ल	1 नवरात्रारंभ
23	सितम्बर	मंगल	----------	2
24	सितम्बर	बुध	----------	3
25	सितम्बर	गुरु	----------	4 विनायकी चतुर्थी व्रत
26	सितम्बर	शुक्र	----------	4
27	सितम्बर	शनि	----------	5
28	सितम्बर	रवि	----------	6

ऑनलाईन सदस्यता के लिए लॉग इन करें
www.krishakjagat.org

मिट्टी ,फसल की सेहत सुधारने हुई साझेदारी

आईसीएल और बायोप्राइम मिलकर भारत में लाएँगे 'बायोनेक्सस' समाधान

पुणे (कृषक जगत)। मिट्टी और फसल स्वास्थ्य को बेहतर बनाने के लिए आईसीएल ने बायोप्राइम के साथ दीर्घकालिक साझेदारी की है। इस साझेदारी के तहत बायोप्राइम के बायोनेक्सस प्लेटफ़ॉर्म पर आधारित नवीन कृषि समाधान अब भारतीय किसानों तक पहुँचेंगे। जानकारी के अनुसार, यह बायोप्राइम की बायोनेक्सस लाइब्रेरी के लिए पहली साझेदारी है। इस लाइब्रेरी में 18,000 से अधिक अनूठे माइक्रोबियल स्ट्रेन्स मौजूद हैं। प्रत्येक स्ट्रेन की विशेषताएँ अलग-अलग हैं और इन्हें विशेष रूप से मिट्टी की गुणवत्ता सुधारने व फसलों की सेहत बढ़ाने के लिए विकसित किया गया है। विशेषज्ञों का मानना है कि इस पहल से भारत में सतत कृषि को बढ़ावा मिलेगा और किसानों को उत्पादकता बढ़ाने में मदद मिलेगी।

पोषक तत्व दक्षता पर रहेगा शुरुआती फोकस

साझेदारी की शुरुआत उन उत्पादों से होगी जो फसलों में पोषक तत्वों के उपयोग की दक्षता (NUE) बढ़ाएँगे। पहले चरण में ध्यान फॉस्फोरस (P) और जिंक (Zn) पर रहेगा। ये दोनों पोषक तत्व भारतीय किसानों के लिए महंगे और सीमित मात्रा में उपलब्ध हैं। भारत की विश्व में कुल फॉस्फेट उपभोग की लगभग 12% हिस्सेदारी है, लेकिन इसके लिए आयात पर काफी निर्भर रहता है। स्थिति यह है कि मिट्टी की परिस्थितियों के कारण किसानों द्वारा डाला गया करीब 85% फॉस्फोरस बेकार चला जाता है। इसी तरह, देश की लगभग 48% भूमि जिंक की कमी से जूझ रही हैं। विशेषज्ञों का अनुमान है कि खासकर दक्षिणी राज्यों में यह कमी फसल उत्पादन की घटती दक्षता के कारण 63% तक पहुंच सकती है। भारत में फॉस्फोरस की सबसे बड़ी चुनौती यह है कि यहां अधिकांश फॉस्फोरस लौह तत्व (Fe) और एल्युमिनियम (Al) से बंधकर मिट्टी में ही रह जाता है। दूसरी जगहों पर यह समस्या कैल्शियम (Ca) के साथ देखने को मिलती है। मौजूदा समाधान इन तत्वों से फॉस्फोरस को मुक्त नहीं कर पाते, जिससे फॉस्फोरस उपयोग दक्षता (PUE) लगातार घटती जा रही है।

आईसीएल ग्रोइंग सॉल्यूशन्स इंडिया के कंट्री लीड श्री अनंत कुलकर्णी ने कहा - 'आईसीएल भारत में टिकाऊ कृषि को आगे बढ़ाने के लिए प्रतिबद्ध है। हम बायोफर्टिलाइज़र और अनुसंधान-आधारित WSF पोर्टफोलियो के माध्यम से बायोस्टिमुलेंट्स को फसल योजनाओं में शामिल कर रहे हैं। इससे किसानों की पैदावार और मुनाफा दोनों बढ़ेंगे। हमें विश्वास है कि बायोफर्टिलाइज़र भविष्य की खेती में अहम भूमिका निभाएँगे और देश की खाद्य सुरक्षा और विकास को मजबूत करेंगे।'

का लगभग 12% हिस्सा है, लेकिन इसके लिए आयात पर काफी निर्भर रहता है। स्थिति यह है कि मिट्टी की परिस्थितियों के कारण किसानों द्वारा डाला गया करीब 85% फॉस्फोरस बेकार चला जाता है। इसी तरह, देश की लगभग 48% मिट्टियाँ जिंक की कमी से जूझ रही हैं। विशेषज्ञों का अनुमान है कि यह कमी घटती उपजाकुशलता के कारण 63% तक पहुँच सकती है, खासकर दक्षिणी राज्यों में।

भारत में फॉस्फोरस की सबसे बड़ी चुनौती यह है कि यहां अधिकांश फॉस्फोरस लोहे (Fe) और एल्युमिनियम (Al) से बंधकर मिट्टी में फँस जाता है। दूसरी जगहों पर यह समस्या कैल्शियम (Ca) के साथ देखने को मिलती है। मौजूदा समाधान इन Fe/Al बांधों से फॉस्फोरस को मुक्त नहीं कर पाते, जिससे फॉस्फोरस उपयोग दक्षता (PUE) लगातार घटती जा रही है।

पोषक तत्व दक्षता पर फोकस

साझेदारी की शुरुआत उन उत्पादों से होगी जो फसलों में पोषक तत्वों के उपयोग की दक्षता (NUE) बढ़ाएंगे। पहले चरण में ध्यान फॉस्फोरस (P) और जिंक (Zn) पर रहेगा। ये दोनों पोषक तत्व भारतीय किसानों के लिए महंगे और सीमित मात्रा में उपलब्ध हैं। भारत की विश्व में कुल फॉस्फेट उपभोग की लगभग 12% हिस्सेदारी है, लेकिन इसके लिए आयात पर काफी निर्भर रहता है। स्थिति यह है कि मिट्टी की परिस्थितियों के कारण किसानों द्वारा डाला गया करीब 85% फॉस्फोरस बेकार चला जाता है। इसी तरह, देश की लगभग 48% भूमि जिंक की कमी से जूझ रही हैं। विशेषज्ञों का अनुमान है कि खासकर दक्षिणी राज्यों में यह कमी फसल उत्पादन की घटती दक्षता के कारण 63% तक पहुंच सकती है। भारत में फॉस्फोरस की सबसे बड़ी चुनौती यह है कि यहां अधिकांश फॉस्फोरस लौह तत्व (Fe) और एल्युमिनियम (Al) से बंधकर मिट्टी में ही रह जाता है। दूसरी जगहों पर यह समस्या कैल्शियम (Ca) के साथ देखने को मिलती है। मौजूदा समाधान इन तत्वों से फॉस्फोरस को मुक्त नहीं कर पाते, जिससे फॉस्फोरस उपयोग दक्षता (PUE) लगातार घटती जा रही है।

बायोप्राइम एग्रीसॉल्यूशंस की सह-संस्थापक और सीईओ रेणुका करंदीकर ने कहा-'हमारा मिशन हमेशा से कृषि की सबसे कठिन चुनौतियों का समाधान करने के लिए जैविक शक्ति का उपयोग करना रहा है। आईसीएल के साथ यह साझेदारी एक रणनीतिक कदम है, जो हमें भारत के किसानों तक 'बायोनेक्सस प्लेटफ़ॉर्म' पहुँचाने में मदद करेगी। आईसीएल की विशेषज्ञता और वितरण नेटवर्क इस दिशा में अहम भूमिका निभाएँगे।

फॉस्फोरस और जिंक पर सीधा असर दिखाएँगे नए स्ट्रेन्स

बायोनेक्सस प्लेटफ़ॉर्म ने कुछ विशेष माइक्रोबियल स्ट्रेन्स की पहचान की है, जो मिट्टी में लोहे (Fe) और एल्युमिनियम (Al) से बंधे फॉस्फोरस को सक्रिय कर सकते हैं। शुरुआती नतीजों में इन स्ट्रेन्स ने फॉस्फोरस उपयोग दक्षता 2 से 3 गुना तक बढ़ाने की क्षमता दिखाई है। इसी तरह, प्लेटफ़ॉर्म ने ऐसे स्ट्रेन्स भी उपलब्ध कराए हैं जो मिट्टी में जिंक को 65-70% तक घुलनशील बना सकते हैं। इससे पौधों को जिंक आसानी से मिल पाएगा और उनकी वृद्धि बेहतर होगी।

कृषक जगत जिला प्रतिनिधि

कृषक जगत की वार्षिक सदस्यता, विज्ञापन, समाचार, कृषि पुस्तकें एवं कृषि डायरी हेतु संपर्क करें-

उत्तम कुमार देशमुख
(जिला प्रतिनिधि)
नावेल्टी न्यूज एजेंसी
ग्राम निकुंम, जिला दुर्ग (छ.ग.)
मो. : 8236059865

कृषक जगत जिला प्रतिनिधि

कृषक जगत की वार्षिक सदस्यता, छोटे-बड़े विज्ञापन, कृषि समाचार, कृषि लेख, कृषि पुस्तकें एवं कृषि डायरी हेतु संपर्क करें-

बलभद्र शर्मा
डागा चौक वार्ड नं. 10, खरियार रोड, नुआपाड़ा (उड़ीसा)
पिन नं. 766104
मो. : 6371774361

छोटा विज्ञापन बड़ा लाभ

व्यक्तिगत क्लासीफाइड

विज्ञापन के लिए निर्धारित कैटेगरीज-

- बेचना/खरीदना- ट्रैक्टर, ट्राली, थ्रेशर, खेत, मकान, मोटरसाइकल, पशु, मोटर, जनरेटर आदि
- बीज ▪ औषधीय फसल

विज्ञापन दर - मात्र रु. 600/- प्रति संस्करण लगातार 4 सप्ताह तक

- अधिकतम 25 शब्द
- अतिरिक्त शब्द- 2 रु. प्रति शब्द, अधिकतम 40 शब्दों तक

डिस्प्ले क्लासीफाइड

विज्ञापन दर : रु. 800/- प्रति अंक, प्रति संस्करण
साइज : फिक्स साइज- 8 × 5 = 40 वर्ग से.मी.

कैटेगरीज- बीज, कीटनाशक, जैविक खाद, ट्रेवल्स, तीर्थ यात्रायें, आवश्यकता, ऑटोमोबाइल पार्ट्स, कृषि सेवा केन्द्र, शिक्षण संस्थाएं, प्रशिक्षण, बारदाने, कोल्ड स्टोरेज, गोदाम, होस्टल, वित्तीय संस्थाएं, चिकित्सक, एग्री क्लीनिक आदि।

कृषक जगत
की सदस्यता एवं विज्ञापन के लिए हेल्पलाइन नं.
(सोमवार से शनिवार प्रातः 9 बजे से शाम 7 बजे तक)
62 62 166 222
www.krishakjagat.org @krishakjagat
@krishakjagatindia @krishak_jagat

78 वर्ष
कृषक जगत
राष्ट्रीय कृषि अखबार
भोपाल-जयपुर-रायपुर

वर्ष में कई आकर्षक एवं संग्रहणीय विशेषांक

- खरीफ विशेषांक
- पौध संरक्षण विशेषांक
- रबी विशेषांक
- बीज विशेषांक
- बागवानी विशेषांक

25 लाख पाठक

कृषक जगत की सदस्यता राशि
⇨ वार्षिक रु. 600/- ⇨ दो वर्ष रु. 1000/-
⇨ तीन वर्ष रु. 1500/-

डाक से नियमित रूप से 'कृषक जगत' - प्रति सप्ताह ☐ भोपाल ☐ जयपुर ☐ रायपुर संस्करण निम्न पते पर एक वर्ष/दो वर्ष / तीन वर्ष भेजें. (अपनी आवश्यकता के अनुरूप निशान लगायें).

नाम .....
.....
ग्राम ..... पो. .....
डाक वितरण हेतु अपने क्षेत्रीय पोस्टमैन का मो. नं. अवश्य दें : .....
वि.ख. ..... तह. .....
जिला ..... पिन ☐☐☐☐☐☐ राज्य .....
शिक्षा ..... भूमि ..... उम्र .....
ट्रैक्टर/मॉडल ..... फोन/मो. .....
ई-मेल .....
मेरा सदस्यता शुल्क रुपये ..... नगद/डिमांड ड्राफ्ट/UPI/Bank/
मनीऑर्डर/क्र. ..... 'कृषक जगत' भोपाल के नाम संलग्न है।

कृषक जगत में सदस्यता लेने के माध्यम
कृषक जगत ऑनलाइन पेमेंट लिंक
http://www.krishakjagat.org/krishak-jagat-subscription/index.php
Online Payment- SBI-A/C No. 53007193070, IFSC : SBIN 0005793, Google Pay/Phone Pe/PAYTM/UPI : Mobile 9826255861
कृषक जगत हेल्पलाइन नम्बर 6262166222

पेमेंट के बाद : 1. पेमेंट का स्क्रीनशॉट भेजें इस फोन नम्बर पर 9826255861
2. पूरा नाम, पता पिन कोड के साथ भेजें।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
प्रसार प्रबंधक कृषक जगत

भोपाल : 14, इंदिरा प्रेस काम्पलेक्स, एम.पी. नगर, भोपाल-462011 फोन: 0755-4248100, मो. : 9926653355, 9826255861, E-mail-info@krishakjagat.org
जयपुर : एच-64, मीरा मार्ग, बनी पार्क, जयपुर (राज.), मो. : 9829254092, 7387422952
रायपुर : एलआईजी-5, सेक्टर-2, शंकर नगर, रायपुर (छ.ग.),मो.: 9826255862
इंदौर : 331-332, आर्बिट माल, ए.बी. रोड, विजय नगर चौराहे के पास इंदौर, मो. : 9826021837, 9826024864
नई दिल्ली : 403,आईएनएस बिल्डिंग, रफी मार्ग, नई दिल्ली, मो. : 7387422952

सदस्यता शुल्क भुगतान के लिए QR कोड स्कैन करें

चम्बल फर्टिलाइजर की कृषक गोष्ठी

बिलासपुर। चम्बल फर्टिलाइजर्स एंड केमिकल्स लि. गड़ेपान कोटा द्वारा आयोजित कृषक गोष्ठी गाँव खरकेना जिला बिलासपुर में की गई। कार्यक्रम में दिल्ली से आए कम्पनी के वरिष्ठ प्रबंधक श्री पंकज कुमार सक्सेना और छत्तीसगढ़ के वरिष्ठ क्षेत्रीय प्रबंधक श्री सुशील कुमार दुबे ने कृषि तथा किसानों के विकास के लिए चलाए जा रहे बुआई से कटाई कार्यक्रम का जायज़ा लिया तथा किसानों को मिट्टी की जाँच कराने तथा भूमि सुधार हेतु आवश्यक कृषि आदानों के उपयोग की सलाह दी।

कंपनी के वरिष्ठ प्रबंधक श्री पंकज कुमार सक्सेना का पुष्पगुच्छ से स्वागत करते हुए ग्राम खरकेना बिलासपुर के विक्रेता श्री मनोज अग्रवाल।

कार्यक्रम में उपस्थित किसानों को धान फसल की उन्नत खेती करने की जानकारी देते हुए बताया की कृषि आदानों का प्रयोग वैज्ञानिकों द्वारा सिफ़ारिश की गई संतुलित मात्रा में किया जाना चाहिए जिससे कि किसानों को कम लागत में अधिक लाभ प्राप्त हो सके। कंपनी के द्वारा उपलब्ध कराए जा रहे उत्कृष्ट आदानों में जैविक खाद उत्तम सुपरराइजा तथा उत्तम प्रणाम किसानों द्वारा उपयोग करने की सलाह दी गई। कार्यक्रम में उपस्थित किसानों को पौध संरक्षण, कीटनाशक दवाओं की जानकारी दी गई। कंपनी के अधिकारी श्री स्नेहिल चौधरी ने सभी का स्वागत एवं आभार व्यक्त किया।

पीएम-प्रणाम किसान संगोष्ठी में किसानों को मिली आधुनिक खेती की जानकारी

संगोष्ठी में PPL & ZFHL कंपनी के अधिकारी हुए शामिल

बलरामपुर। बलरामपुर जिले के वाड्रफनगर ब्लॉक के ओदारी गांव में गत दिनों एक विशाल पीएम-प्रणाम किसान संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में 150 से अधिक किसानों ने भाग लिया। भारी बारिश के बावजूद, किसानों ने उत्साहपूर्वक हिस्सा लिया, जिससे कार्यक्रम सफल रहा।

संगोष्ठी में PPL & ZFHL कंपनी के अधिकारियों ने किसानों को मिट्टी की जांच और उसके लाभों के बारे में विस्तार से बताया। अधिकारियों ने 'जय किसान नवरत्न टीएसपी 46 प्रतिशत पी' को डीएपी के एक प्रभावी विकल्प के रूप में प्रस्तुत किया।

उन्होंने बताया कि इस उत्पाद में 46 प्रतिशत फॉस्फोरस सामग्री (P_2O_5) होती है और यह पानी में पूरी तरह घुलनशील है, जिससे यह फसलों की गुणवत्ता बढ़ाने में मदद करता है।

PPL & ZFHL के अधिकारियों ने किसानों को जय किसान के जैविक उत्पादों के बारे में भी जानकारी दी, जिसमें 'जेकेएनएस नैनो डीएपी/यूरिया', 'जेके नाइट्रोनिक 32' और 'भूमिमित्रा' जैसे उत्पाद शामिल थे। उन्होंने बताया कि ये उत्पाद मिट्टी की उर्वरता और धान व सब्जियों जैसी फसलों की पैदावार बढ़ाने में कैसे सहायक हैं।

कार्यक्रम में जय किसान नवरत्न उत्पादों के महत्व पर भी चर्चा की गई, जिनसे किसानों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति में सुधार हो सकता है। इसके अलावा, किसानों को जय किसान 20:20:0:13, पंच रतन, नवरत्न पावर, महा जाइपमाइट, प्रोम, पीडीएम गोल्ड, जिंक 33 प्रतिशत और अन्य एस.पी.एन. व सी.पी.सी. उत्पादों के सही उपयोग और फायदों के बारे में भी बताया गया।

अधिकारियों ने विशेष रूप से धान और सब्जियों की फसलों के लिए जिंक मोनो, माइक्रोन, स्नाइपर जीआर, चेमफ्री वैमैक्स और रत्नाजेंट जैसे उत्पादों का उपयोग करने की सलाह दी। इस अवसर पर चैनल पार्टनर मेसर्स जायसवाल कृषि विस्तार केंद्र के डीलर भी मौजूद थे।

संगोष्ठी में सरपंच श्री झिरमन दुबे और प्रगतिशील किसान श्री चमारू सिंह जैसे गणमान्य व्यक्तियों ने भी भाग लिया। PPL & ZFHL की ओर से श्री अमरीश अहलावत (एमडीएम), श्री हरिकिशन वाजपेयी (एमओ-अंबिकापुर) और श्री विक्की कुमार (डीबीटीएस) ने किसानों को मार्गदर्शन दिया।

यह कार्यक्रम किसानों को आधुनिक कृषि तकनीकों और बेहतर उत्पादों से परिचित कराने में एक महत्वपूर्ण कदम साबित हुआ, जिससे वे अपनी पैदावार और आय बढ़ा सकेंगे।

छ.ग. में वर्षा की स्थिति (मि.मी. में)

1 जून से 15 सितम्बर 2025 तक

जिला	वास्तविक वर्षा	सामान्य वर्षा	सामान्य से अधिक या कम %
बालोद	1058.6	948.1	12
बालोदा बाजार	711.3	865.0	-18
बलरामपुर	1399.8	919.3	52
बस्तर	1393.8	1084.5	29
बेमेतरा	483.7	966.2	-50
बीजापुर	1391.8	1279.9	9
बिलासपुर	1027.6	985.1	4
दंतेवाड़ा	1376.4	1202.3	14
धमतरी	902.0	984.7	-8
दुर्ग	847.5	912.7	-7
गरियाबंद	866.8	977.7	-11
गौरेला, पेंड्रा, मरवाही	1010.0	1016.8	-1
जांजगीर	1186.1	1020.6	16
जशपुर	967.2	1252.5	-23
कबीरधाम	739.6	795.1	-7
कांकेर	1083.0	1237.7	-13
खैरागढ़-छुईखदान गंडई	724.3	682.4	6
कोण्डागांव	935.9	1087.8	-14
कोरबा	1027.9	1080.2	-13
कोरिया	1105.3	1025.1	7
महासमुंद	721.0	987.7	-27
मनेन्द्रगढ़ भरतपुर	1002.0	1032.0	-3
मोहला, मानपुर चौकी	1239.1	954.7	30
मुंगेली	1042.1	887.1	17
नारायणपुर	1010.5	1148.4	5
रायगढ़	1215.4	1113.8	9
रायपुर	860.4	941.2	-9
राजनंदगांव	852.0	962.8	-12
शक्ती	1086.6	1048.1	4
सारंगगढ़, बिलाईगढ़	829.1	856.2	-3
सुकमा	1089.2	1105.5	-1
सूरजपुर	1066.8	1116.2	-4
सरगुजा	777.7	1093.0	-29

स्त्रोत: पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय भारत मौसम विज्ञान विभाग, मौसम केन्द्र, रायपुर

सर्वोत्तम गुणवत्तावाली
जैन ड्रिप की विस्तृत उत्पादन श्रृंखला -
सभी फसलों # के लिए हर किसान के बजट के अनुरूप विभिन्न प्रकार के ड्रिप सिचाई व्यवस्था के विकल्प स्टॉक में उपलब्ध हैं।
(# दलहन, धान, तिलहन, सब्जियाँ एवं फल बागानें आदि के लिए)

जैन टर्बो स्लिम - टीई व सुपर सेव्हर
5 से 20 मील (0.13 से 0.5 मिमी)
साईज - 12, 16, 20 मिमी

जैन टर्बो एक्सेल प्लस
0.4 मिमी, क्लास 1 एचडी व क्लास 2
साईज - 12, 16, 20 मिमी

जैन टर्बो लाईन सुपर
0.4 मिमी, क्लास 1 एचडी व क्लास 2
साईज - 12, 16, 20 मिमी साईज

जैन टर्बो लाईन - पीसी
क्लास २
साईज - १६, २० मिमी

जैन टर्बो टॉप - एचडी पीसी
१३, १५ मील (0.33, 0.38 मिमी) - क्लास 1 व 2
साईज - 12, 16, 20 मिमी

जैन पॉलीट्यूब एवं ड्रिपर्स
साईज - 12, 16, 20, 25, 32 मिमी

नोट : ड्रिपर्स व ड्रिपलाईन अलग-अलग प्रेशर रेटींग में उपलब्ध

जैन ड्रिप
प्रति बूँद, फसल भरपूर!®

जैन इरिगेशन सिस्टम्स लि.
छोटे छोटे कदम, आसमान छूने का दम!®

दूरभाष: 0257-2258011; 6600800
टोल फ्री : 1800 599 5000
ई-मेल: jisl@jains.com; वेबसाईट: www.jains.com

सावधान! नकल करके ड्रिप बनाने वाले एवं नकली ड्रिप कंपनियों और वितरकों से सतर्क रहें!

सेहतमंद टमाटर, मुनाफ़े की बात, ICL है हर किसान के साथ।

आज ही हमारे टोल-फ़्री नंबर पर कॉल करें और अपने नज़दीकी
ICL डीलर/रीटेलर से ICL के प्रोडक्ट्स ख़रीदें।

अपनी फसलों को दीजिए ICL का भरोसा।

ICL Management & Trading India Pvt. Ltd.
ICL India, 306, Tower A, Millennium Plaza, Sec-27, Gurugram,
Haryana, INDIA. Tel: +91-124-4044186, Fax: +91-124-4044189

1800 210 3031
880 618 51 95

Scan me Scan me Scan me